शक्तिमान बहनें

अमेरिकन महिलाएं जिन्होंने समाज
पर अपनी छाप छोड़ी

शक्तिमान बहनें

अमेरिकन महिलाएं जिन्होंने समाज
पर अपनी छाप छोड़ी

लेखन : योना ज़ेल्दिस मक्डोनॉ
चित्रसज्जा : मलका ज़ेल्दिस

अनुक्रमणिका

लेखिका का कथन

पोकाहोंटस

हैरिएट टबमेन

एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन और सूज़न एंथोनी

क्लारा बार्टन

एमिली डिस्किंसन

मैरी कसाट

हेलेन केलर

एलेनोर रूज़वेल्ट

एमेलिया एयरहर्ट

मार्गरिट मीड

संदर्भ सूची

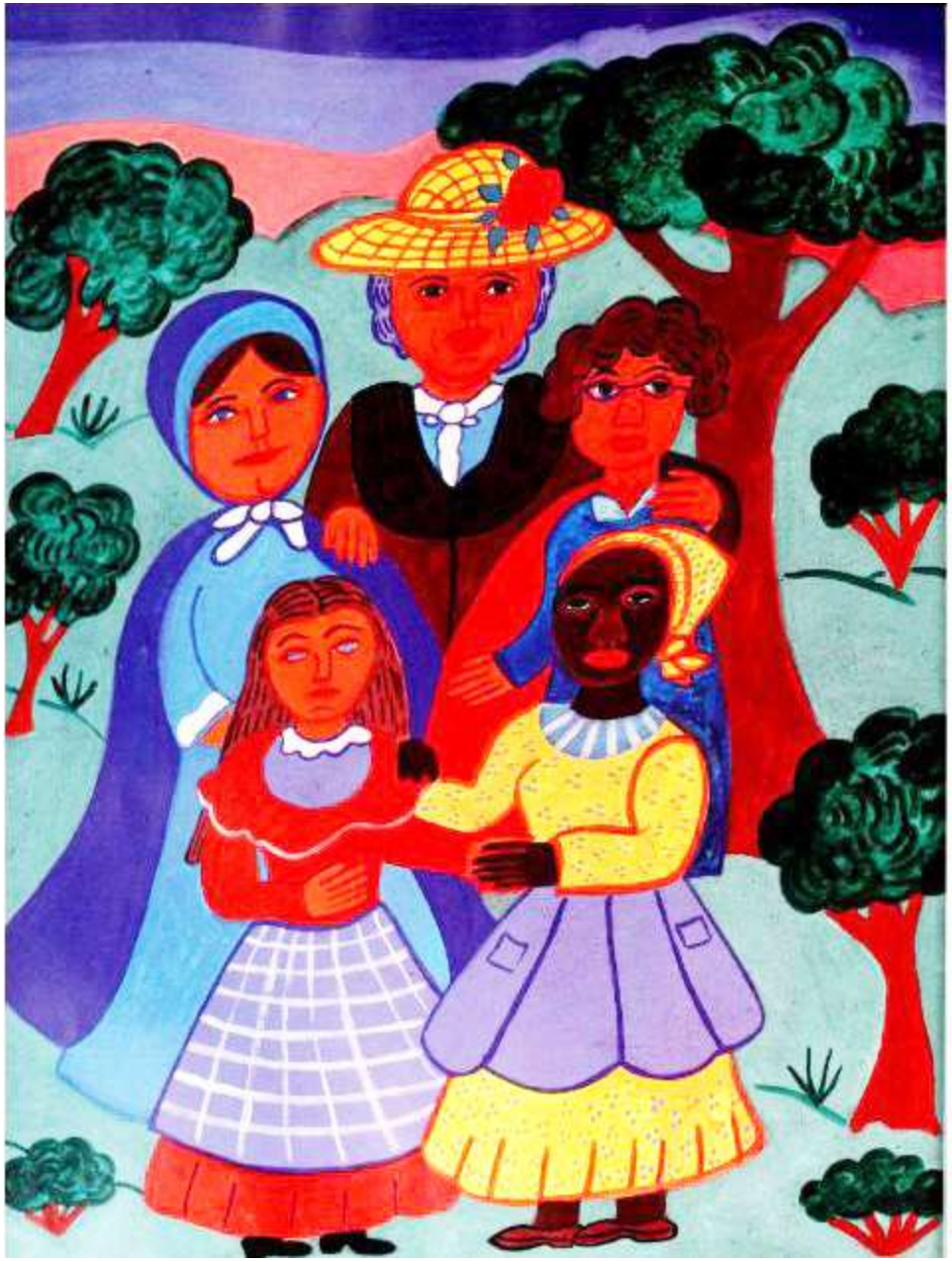

लेखिका का कथन

महत्वपूर्ण अमेरिकन महिलाओं के विषय में शोध करना और लिखना, यह कार्य चुनौती भरा भी था, और प्रेरणादायक भी। चुनौती भरा इसलिए कि अनेकों प्रेरणाप्रद चरित्रों में से केवल ग्यारह को चुन पाना बड़ा कठिन कार्य था। और प्रेरणाप्रद इसलिए क्योंकि इन सभी की जीवन गाथाएं मन को छू लेने वाली, और मस्तक को ऊंचा करने वाली थीं।

यह पुस्तक कई प्रकार की उपलब्धियों की झलक दिखलाती है। एमेलिया एयरहर्ट, जिनका जीवन शायद सामाजिक क्रियाशीलता-पूर्ण जीवन की एक मिसाल होगा, सर्वथा भिन्न है एमिली डिस्किंसन से, जिनका जीवन एकांतपूर्ण और घर की चहारदीवारी के भीतर होते हुए भी अत्यंत प्रेरणाप्रद और घरेलू जीवन का आदर्श प्रस्तुत करने वाला है। हेरिएट टबमेन और क्लारा बार्टन की जीवनियां दूसरों की सेवा का आदर्श प्रस्तुत करती हैं, और मानव मात्र की दशा के प्रति आदर की सीख देती हैं। इन सभी व अन्य महिलाओं की प्रत्येक कथा उनके विशिष्ट जीवन मूल्यों और उनके विवेक को दर्शाती है।

नेतृत्व, मनवतावाद, गरिमा, सृजनात्मकता, ये सभी व अन्य अनेक गुण इन कहानियों की महिलाओं के चरित्र में साफ़ परिलक्षित होते हैं। और मुझे आशा है, कि इन कहानियों के नौजवान पाठक भी इन गुणों का अनुसरण करना चाहेंगे।

- योना ज़ेल्दिस मक्डोनॉ

पोकाहोंटस
१५९५ - १६१७

उसका ह्रदय दयाऔर करुणा से परिपूर्ण था, जिस कारण मैं उसका बहुत सम्मान करती हूँ।

यद्यपि पौहाटन की कई पत्नियां, और अनेकों बच्चे थे, नन्ही पोकाहोंटस उसकी सबसे प्रिय पुत्री थी। अलगोन्कियन लोगों का मुखिया होने के नाते पौहाटन अपने कबीले का एक शक्तिशाली नेता था, जो उस इलाके में रहता था जिसे अब वर्जीनिया कहा जाता है। पोकाहोंटस उसकी राजकुमारी थी।

उसके शुरुआती जीवन के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती। पौहाटन के अधिकांश बच्चों की तरह, पोकाहोंटस को भी जन्म के बाद उसकी माँ से अलग करके उसके पिता के घर में पाला पोसा गया। अलगोन्कियन कबीले की साधारण लड़कियों को जो काम करने पड़ते थे, जैसे,खाना पकाना, पानी व् लकड़ी लाना, बागबानी करना, सिलाई-कढ़ाई करना इत्यादि, उसे नहीं करने पड़े। शायद उसके दिन तालाबों-नदियों में तैरते और जंगलों में घूमते निकलते थे। हालाँकि उसका असली नाम माटोआका था, सब उसे पोकाहोंटस कह कर ही बुलाते थे, जिसका मतलब है चुलबुली, जो उसके लिए बिलकुल उपयुक्त भी था।

पोकाहोंटस लगभग १२ वर्ष की थी, जब उसकी पहली मुलाकात अँगरेज़ आगंतुकों से हुई, जो अपने जहाज़ों से चेसापीक खाड़ी के तट पर उतरे थे। ये अँगरेज़ लोग अपने लोगों के लिए रहने की नई जगहें खोजने और अपने ऊनी कपड़ों और कम्बलों के लिए नए बाजार ढूंढने आये थे। उन्हें यह भी लगता था कि इस नई दुनिया में बहुत सोना है, जिसे वे अपने घर ले जाना चाहते थे। सन १६०७ में उन्होंने जेम्सटाउन नामक बस्ती की स्थापना की जिसका नाम किंग जेम्स प्रथम के नाम पर रखा गया था। यहाँ एक व्यापार मंडी, एक गिरिजाघर, एक माल गोदाम, और कुछ कच्चे घर थे। साफ़ तौर से उनका इरादा यहाँ बस जाने का था।

पौहाटन इन आगंतुकों को शक की नज़र से देखता था। उसे उनके दिए हुए कांच के मनके और तांबे के बर्तन तो पसंद थे, जो उसने मक्के की बोरियों के बदलें में उनसे पाए थे, और वह उनकी बंदूकें भी पाना चाहता था। लेकिन उसे डर था कि ये अँगरेज़ उसके लोगों पर हमला करके उनकी ज़मीन हड़प लेंगे। परन्तु पोकाहोंटस को इन लोगों में बहुत रूचि थी और वह अक्सर जेम्सटाउन जाया करती थी। वहीं उसकी मुलाकात कप्तान जॉन स्मिथ से हुई, और दोनों में दोस्ती हो गई।

पोकाहोंटस ने स्मिथ को अपनी भाषा सिखाई, और स्मिथ ने उसे अंग्रेजी सिखाई। जब ये विदेशी अपने घर बनाते, और खेती के लिए जंगल साफ़ करते तो यह सब देखना उसे बहुत अच्छा लगता था। थोड़े अलग होने के बावजूद उसे ये अजनबी लोग अच्छे लगने लगे। जब उन लोगों का अनाज का भंडार कम पड़ने लगा, तो पोकाहोंटस ने अपने लोगों से आग्रह किया कि वे जेम्सटाउन के लिए और अनाज भेजें। उसने स्मिथ को दूसरे कबीलों के बारे में बताया जिनसे वह अनाज का सौदा कर सकता था। बाद में जेम्स ने कहा था, कि पोकाहोंटस के कारण ही उनकी बस्ती अकाल और विनाश से बच सकी। उसने स्मिथ की जान भी बचाई। जब उसे पता चला कि उसके पिता स्मिथ को मारना चाहते हैं, उसने चुपके से उसे इसकी खबर कर दी, और स्मिथ बच कर भागने में कामयाब हो गया।

अंग्रेज़ों और अलगोन्कियन लोगों के बीच शांति को बढ़ावा देने के पोकाहोंटस के प्रयासों के बावजूद दोनों समूहों के बीच तनाव बढ़ने लगा। जब उसके पिता ने ६० अंग्रेज़ों के नरसंहार का आदेश दिया, तो पोकाहोंटस घर छोड़ कर उत्तर में बसे पोटोमैक कबीले में जाकर रहने लगी। इसके कुछ समय बाद ही सैमुएल अर्गल नाम का एक अँगरेज़ कप्तान पोटोमैक कबीले में पहुंचा, क्योंकि वह बरमूडा जाते समय रास्ता भटक गया था। पोकाहोंटस उससे मिल कर बहुत प्रसन्न हुई, लेकिन उसे पता नहीं था कि वह कप्तान उसे अगवा करके बदले में फिरौती की बड़ी रकम ऐंठना चाहता था। उसने दो पोटोमैक लोगों को रिश्वत दी, और उनके माध्यम से पोकाहोंटस को अपने जहाज़ पर बुलाया। उसे अच्छा भोजन कराया, और दोनों पोटोमैक लोग उसे अंग्रेज़ों के पास छोड़ कर चुपके से जहाज़ छोड़ कर चले गए।

पोकाहोंटस को एक फार्म पर ले जाया गया, जहाँ उसे उसके रेड इंडियन कपड़ों के स्थान पर अंग्रेजी कपडे पहनने को बाध्य किया गया। उसे ईसाई धर्म की शिक्षा दी गई, और उसका धर्म परिवर्तन कर उसका नाम रेबेका रख दिया गया। लेकिन अर्गल की योजना विफल हो गई। पौहाटान ने पोकाहोंटस की रिहाई के लिए कोई बातचीत या सौदा करने से इंकार कर दिया, और अचरज की बात यह थी कि जिन्होंने उसे बंदी बनाया था पोकाहोंटस उन्हीं लोगों को पसंद करने लगी, क्योंकि वे उससे अच्छा बर्ताव करते थे।

जब जॉन रॉल्फ़ नाम के तम्बाकू किसान ने उससे शादी करने की इच्छा जताई, तो वह तैयार हो गई। हालांकि पौहाटन विवाह में शामिल तो नहीं हुआ, लेकिन अंग्रेज़ों के प्रति उसके विचारों में कुछ नरमी अवश्य आ गई होगी, क्योंकि उसने पोकाहोंटस को एक मोतियों का हार और काफी ज़मीन शादी की भेंट स्वरुप दी।

अगले वर्ष पोकाहोंटस ने एक बालक को जन्म दिया जिसका नाम थॉमस रखा गया। जब वह एक वर्ष का हुआ, तो उनका छोटा सा परिवार जहाज़ पर सवार हो इंग्लैंड को चल पड़ा। पोकनोंटास को लंदन शहर के वैभव ने चकाचौंध कर दिया। उसे राज-महल आने का भी न्योता मिला, जहाँ उसने महारानी ऐन से मुलाकात की। लेकिन उसे इंग्लैंड की नम आबोहवा रास नहीं आई, और वह बीमार पड़ गई। खांसी से ग्रस्त, वह दिन-पर-दिन कमज़ोर होने लगी। अस्वस्थ होने के बावजूद उसने वापस जाने का निश्चय किया, और जहाज़ पर सवार हो गई। लेकिन अटलांटिक सागर तक पहुँचने से पहले ही उसे आभास हो गया कि वह यात्रा पूरी होने तक जीवित नहीं बचेगी। उसने अपने पति से विनती करके जहाज़ को तट पर पहुँचवाया, और उसे एक नज़दीक के मुसाफ़िरखाने में ले जाया गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

जिस नौजवान महिला ने अपने देश में शांति स्थापित करने के लिए इतने प्रयत्न किये थे, उसे मृत्यु के बाद इंग्लैंड के ग्रावसेन्ड नमक स्थान पर दफना दिया गया।

हेरिएट टबमैन
१८२० - १९१३

अब जबकि मैं स्वतंत्र थी, मैंने अपने हाथों पर दृष्टि डाली, और सोचने लगी, क्या मैं वही इंसान हूँ जो पहले थी। सब कुछ इतना खूबसूरत दिखाई दे रहा था। पेड़ों के मध्य से चमकती सूर्य की सुनहरी धूप खेतों को रोशन कर रही थी, और मुझे लग रहा था कि जैसे मैं स्वर्ग में आ पहुंची हूँ।

- हैरिएट टबमैन ने पेनसिलवेनिया पहुँचने पर अपनी मनोदशा का वर्णन कुछ इस प्रकार किया था।

श्रीमती कुक ने मिन्टी को एक बार फिर से बताया कि ऊन को गोलों में कैसे लपेटना है। यह मुश्किल काम था, और अगर मिन्टी कोई गलती करती, तो वह गोरी औरत उसकी पिटाई करती थी।

मिन्टी,जिसका नाम असल में अरमिंटा था, का जन्म मेरीलैंड के एक गुलाम परिवार में हुआ था। वह हेरिएट ग्रीन और बेंजामिन रॉस की बेटी थी, जो दोनों गुलाम थे। छोटी उम्र से ही ब्रोडस साहब ने, जो कि मिन्टी और उसके माता-पिता के मालिक थे, उसे कुक परिवार के पास भाड़े पर दे दिया था। हालाँकि वह सिर्फ छह वर्ष की थी, उसे दिन भर घर का काम करना पड़ता था। रात को वह आतिशदान के नज़दीक सोती, और अपने पैर राख के ढेर में डाल देती, जिससे वे गर्म रहें।

कुक दम्पति उससे बहुत खुश नहीं थे, और जब मिन्टी बीमार पड़ी, तो उन्होंने उसे उसके घर वापस भेज दिया। उसके बात ब्रोडस साहब ने मिन्टी को मिस सूज़न को भाड़े पर दे दिया, उसके बच्चे की देखभाल करने के लिए। अगर बच्चा रात में रोता, और मालकिन की नींद ख़राब होती, तो बेचारी मिन्टी की फिर पिटाई होती। एक बार मिन्टी ने खाने की मेज़ से एक मिठाई का टुकड़ा चोरी कर लिया, और मिस सूज़न से पिटने के बजाय सूअरों के बाड़े में छुपना बेहतर समझा। इस बार, ब्रोडस साहब ने उसे भाड़े पर देने के बजाय, अपने खेतों में काम करने भेज दिया।

खेतों में काम करने वाले मज़दूर काम करते-करते आपस में बातें भी करते रहते थे। अक्सर वे इस गुलामी से छूट कर आज़ाद होने के विषय में बातें करते थे। यहीं मिन्टी ने भूमिगत रेल के बारे में सुना, जो कि एक ऐसे लोगों के समूह का नाम था, जो गुलामों को आज़ादी हासिल करने में मदद करते थे। वहीँ उसने एक नीग्रो पादरी, नैट टर्नर के बारे में भी सुना, जिसने दासप्रथा की समाप्ति के लिए एक विद्रोहपूर्ण आंदोलन की शुरुआत की थी। अंततः वह पकड़ा गया और उसे मार डाला गया, लेकिन उसकी कहानी मिन्टी को बहुत प्रेरक लगी।

एक बार उसने अपने ओवरसियर, जिसकी ज़िम्मेदारी थी गुलामों से काम लेना, की अवज्ञा करके एक गुलाम की भाग निकलने में अदद की थी। क्रुद्ध ओवरसियर ने एक भारी पत्थर उस गुलाम पर फ़ेंक कर मारा, लेकिन वह मिन्टी को जा लगा। उसकी सर में गहरी चोट लगी, जिसके कारण वह मरते मरते बची। वह ठीक तो हो गई, लेकिन उस चोट का निशान उसके सर पर जीवन भर बना रहा। उसकी हिम्मत की सभी ने बहुत प्रशंसा की। अब वे उसे मिन्टी न कह कर उसके अपने चुने हुए नाम हेरिएट से बुलाते थे, जो कि असल में उसकी माँ का नाम था।

हेरिएट जब २३ वर्ष की हुई, उसे जॉन टबमैन नाम के एक आज़ाद नीग्रो से प्रेम हो गया, और उसने उससे विवाह कर लिया। उसने जॉन के पलंग के लिए एक खूबसूरत गद्दा सिला, और उसके साथ जाकर रहने लगी। जॉन बहुत्त प्रसन्न था, लेकिन हेरिएट को एक चिंता सता रही थी। उसके पुराने मालिक ब्रोडस साहब अब दुनिया में नहीं थे, और अब डॉक्टर अंथोनी थॉम्पसन उसके नए मालिक थे। उसे डर था की कहीं वह उसे किसी और को न बेच दें। उसने जॉन से मिन्नत की कि वे भाग कर उत्तर को चले जाएँ, लेकिन जॉन इसके लिए तैयार नहीं था।

और हेरिएट का डर सही साबित हुआ। डॉक्टर थॉम्पसन ने उसे और उसके तीन भाइयों को बेच दिया। गुलामों का एक सौदागर उन्हें ले जाने के लिए आने वाला था। हेरिएट को पता था कि उसके भाई बच कर नहीं निकल पाएंगे, इसलिए उसने अकेले ही भाग निकलने का निश्चय किया। रात को जब सभी सो रहे थे, वह अपना बनाया गद्दा और थोड़ा सा खाने का सामान बांध कर जंगल की ओर निकल पड़ी। जंगल में बड़ा अँधेरा और सन्नाटा था। वह कई बार छोटी नदियों के बीच पैदल चल कर गई, जिससे उसके पीछे छोड़े गए कुत्ते उसकी गंध न पा सकें। पहले वह एक क्वेकर महिला के पास गई जो उसकी दोस्त बन गई थी। क्वेकर एक धार्मिक समुदाय का नाम है, जिसके अनुयायी अहिंसा और इंसानी बराबरी में विश्वास करते हैं। उस महिला ने उसे अगले पड़ाव तक जाने का रास्ता बताया। हैरिएट के पास पैसे तो थे नहीं, इसलिए उसने धन्यवाद स्वरुप अपना गद्दा उस महिला को दे दिया।

दिन के समय हैरिएट क्वेकर लोगों के घरों में छिपी रहती, और रात में ही सफर करती। अंततः वह पेनसिलवेनिया राज्य के फ़िलेडैल्फ़िया शहर पहुँच गई, और अब वह एकदम आज़ाद थी। आज़ादी पाकर हैरिएट खुश तो थी, लेकिन उदास भी थी, क्योंकि उसके सभी सगे सम्बन्धी उससे बहुत दूर थे। उसने निश्चय किया कि वह वापस अपने परिवार के पास जायेगी, और उन्हें भी अपने साथ लेकर आएगी।

कुछ समय बाद हैरिएट को एक होटल में नौकरी मिल गई। जल्दी ही उसकी मुलाकात ऐसे लोगों हुई जो दासप्रथा को गलत मानते थे, और उसकी समाप्ति के लिए प्रयास कर रहे थे। वह उन "कंडक्टर" लोगों भी मिली जो भूमिगत रेलवे का सञ्चालन करते थे, और गुलामों को दक्षिण से भगा कर कनाडा ले जाकर आज़ाद कर देते थे। फिर हैरिएट को पता चल कि उसकी बहन और उसके परिवार को बेचा जाने वाला था। जोखिम उठा कर भी वह मेरीलैंड गई, और अपनी बहन के परिवार को सुरक्षित उत्तर में ले आई। भूमिगत रेलवे की कंडक्टर बनने का यह उसका पहला प्रयास था, लेकिन अंतिम नहीं।

अगले सात सालों में उसने उत्तर और दक्षिण के बीच अनेकों चक्कर लगाए, और अनगिनत गुलामों को आज़ादी दिलाई। एक बार गुलामों के मालिकों के चकमा देने के लिए पुरुष के भेष में अपने पति को साथ लाने गई। लेकिन उसे बड़ा धक्का लगा जब उसने देखा कि उसने दूसरी शादी कर ली है, और वह हैरिएट के साथ आने को तैयार नहीं था। उसका सबसे यादगार दौरा १८५७ में लगा, जब वह अपने बूढ़े माता-पिता को किराये की गाड़ी में बिठा कर उत्तर में ले आई, और उन्हें आज़ादी दिलाई।

हैरिएट की प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई थी। गुलामों के मालिकों ने उसे ज़िंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए चालीस हज़ार डॉलर का पुरस्कार घोषित कर दिया था। लेकिन फिर भी वह गुलामों को छुड़ाने का काम करती रही। आख़िरकार अपने दोस्तों के बहुत समझने पर उसने यह काम छोड़ दिया, और अपने इन साहसिक कारनामों के बारे में व्याख्यान देने लगी। इसी समय उसने ऑबर्न,न्यूयॉर्क के निकट एक फार्म खरीद लिया, जो उसके शेष जीवन उसका घर बना रहा। १८६१ में जब गृह युद्ध छिड़ा, तो वह अब तक गुलाम रहे लोगों की अपने नए आज़ाद जीवन को संवारने में मदद करने लगी। उसने कई तरह के काम किये, एक नर्स का,रसोइये का, और जासूसी का भी।

चार साल बाद जब गृह युद्ध समाप्त हुआ, तो वह ऑबर्न में अपने घर वापस आ गई। वहां वह अपने माता पिता की देख-भाल करने लगी। वे गरीब गुलाम जो अब आज़ाद हो चुके थे, अक्सर उसके पास मदद मांगने आते। हैरिएट ने उनकी सहायता के लिए एक अस्पताल व नर्सिंग होम भी शुरू किया। बयानबे वर्ष की आयु में जब उसकी मृत्यु हुई, तो लोगों ने बहुत शोक मनाया। क्योंकि उसने अपने इतने सारे लोगों को गुलामी से छुड़ाया था, लोग उसे हज़रत मूसा की तरह मानने लगे थे।

एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन
१८१५-१९०२
सूजन एंथोनी
१८२०-१९०६

हमारा मानना है कि यह सत्य स्वतः सिद्ध है, कि ईश्वर ने सभी स्त्री और पुरुषों को एक समान बनाया है।

- *एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन द्वारा लिखित पुस्तक "भावनाओं और संकल्पों का घोषणा पत्र" के प्रारंभिक शब्द।*

लम्बी और इकहरे बदन वाली अविवाहित सूज़न एंथोनी और कुछ ठिगनी और भरे बदन वाली, तीन बच्चों की माँ एलिज़ाबेथ स्टैंटन में ऊपरी रूप से शायद ही कोई समानता नज़र आती हो। लेकिन वर्षों बाद एलिज़ाबेथ ने लिखा था, "मुझे शुरू से ही वह बहुत पसंद आई थी।" उनकी लम्बे समय की मित्रता एक ही उद्देश्य के प्रति समर्पित थी : अमेरिका की महिलाओं के लिए मौलिक अधिकार प्राप्त करना।

एलिज़ाबेथ न्यायाधीश कैडी की चार पुत्रियों में एक थी, और उसका पालन-पोषण न्यूयॉर्क के जॉन्सटाउन में हुआ था। उसका भाई एलज़ार अपने पिता का चहेता था। जज कैडी की इच्छा थी कि उनका बेटा भी एक जज बने, लेकिन दुर्भाग्यवश एलज़ार की छोटी उम्र में ही मृत्यु हो गई। जब जज शोकग्रस्त बैठे थे, उन्हें सांत्वना देने के लिए एलिज़ाबेथ उनकी गोद में जा बैठी। उन्होंने कहा, "मेरी प्यारी बेटी, काश तुम एक लड़का होतीं।"

एलिज़ाबेथ को पता था कि अधिकांश लोग पुत्री के स्थान पर पुत्र की इच्छा रखते थे। काश वह एक ऐसी लड़की बन सकती जो लड़कों जैसी ही होती। उसने पड़ोस में रहने वाले एक सेवानिवृत्त पादरी से उसे यूनानी भाषा सिखाने को कहा, जो कि प्रायः लड़के ही सीखते थे। और उसने घुड़सवारी करना भी सीखा। फिर उसने जॉन्सटाउन अकादमी में प्रवेश ले लिया और बहुत परिश्रम से पढाई की। उस समय के अधिकांश विद्यालयों के विपरीत, यह अकादमी महिलाओं को भी प्रवेश देती थी।

क्योंकि महाविद्यालयों में महिलाओं का प्रवेश वर्जित था, एलिज़ाबेथ उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश नहीं पा सकी। लेकिन उसे ट्रॉय महिला विद्यालय में प्रवेश मिल गया। उसके पिता की इच्छा थी कि वह अब विवाह कर ले। लेकिन एलिज़ाबेथ पीटरबोरो, न्यू हैम्पशायर में अपनी मौसी गेरिट स्मिथ के घर चली गई, जो कि दासप्रथा की समाप्ति की पक्षधर थीं, और उन्होंने गुलामी से छूट कर भागे बहुत लोगों को शरण दी थी।

स्मिथ के माध्यम से ही उसकी मुलाकात हेनरी ब्रूस्टर स्टैंटन से हुई, जो कि बड़े प्रभावशाली रूप से दास-प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाते थे। हेनरी और एलिज़ाबेथ में परस्पर प्रेम हो गया, और उन्होंने विवाह कर लिया। वे दोनों ही दासप्रथा उन्मूलन के कार्य में पूरी तरह संलग्न हो गए। लेकिन जब एलिज़ाबेथ ने देखा की दास-प्रथा उन्मूलन के बहुत से पक्षधर इस आंदोलन के सम्मेलनों में महिलाओं की भागीदारी के खिलाफ थे, तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने एक नई मित्र लुक्रेटिआ मोट्ट के साथ मिल कर अपना अलग सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया। उन्होंने एक और ज्वलंत विषय, यानि महिलाओं के लिए सामान अधिकारों पर भी चर्चा प्रारम्भ की।

इस लक्ष्य की प्राप्ति में उन्हें आठ वर्ष का समय लग गया। इस दौरान एलिज़ाबेथ ने सेनेका फाल्स में अपने तीन बच्चों का लगभग अकेले ही पालन-पोषण किया, क्योंकि उसके पति अक्सर यात्रा पर ही रहते थे। अब उसे समझ आ रहा था, कि अधिकांश महिलाओं को क्या-कुछ झेलना पड़ता है: अंतहीन घरेलू काम-काज, वह भी पतियों से किसी भी सहायता की उम्मीद के बिना।

पहले महिला अधिकार सम्मेलन का आयोजन १९ जुलाई १८४८ को किया गया। इसमें लगभग ३०० लोग वार्ताएं सुनने के लिए एकत्रित हुए। सबसे पहला व्याख्यान एलिज़ाबेथ ने दिया, जिससे बहुत से लोग स्तब्ध और चकित हो गए, क्योंकि उनका मानना था कि सभाओं में व्याख्यान देना महलाओं के लिए उचित नहीं था। उसके बाद अन्य महिलाओं ने भी महिला स्वतंत्रता और समानता पर व्याख्यान दिए। बहुत थकी होने के बावजूद एलिज़ाबेथ बहुत प्रसन्न थी, क्योंकि उस रात एक नया इतिहास लिखा जा रहा था। अब उसने अपने मित्रों से कहा कि अपने पत्रों में वे उसे एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन नाम से सम्बोधित करें, न कि श्रीमती हेनरी स्टैंटन के नाम से। उसे लगा कि विवाह के बाद महिलाओं की अपनी पहचान समाप्त नहीं हो जानी चाहिए।

इसी बीच रॉचेस्टर न्यूयोर्क में एक और दृढ़-निश्चयी महिला ने इस सम्मेलन के बारे में सुना। उसका नाम था सूज़न ब्राउनैल एन्थोनी। एडम्स, मैसाचुसेट्स में जन्मी सूज़न सुप्रसिद्ध क्वेकर परिवार की बेटी थी। उसके पिता डेनियल एंथोनी दासप्रथा उन्मूलन के पक्षधर थे, और सूज़न भी अक्सर दासप्रथा सम्बन्धी वाद-विवादों में जोर-शोर से हिस्सा लेती थी।

सूज़न के पिता की एक छोटी कपडा मिल थी। एक बार, जब कर्मचारी किसी कारण दो हफ्ते काम पर न आ सका, तो सूज़न ने उसकी जगह काम किया, और पारिश्रमिक भी प्राप्त किया। हालाँकि कई लोगों ने इस बात के लिए उसके पिता की आलोचना की, लेकिन सूज़न यह पारिश्रमिक कमा कर बहुत खुश थी।

लेकिन सूजन का प्रारब्ध मिल मज़दूर बनना नहीं था। बल्कि उसने फ़िलेडैल्फ़िया के क्वेकर महिला विद्यालय में अपनी पढाई जारी रखी। लेकिन जब उसके पिता को व्यापार में हानि हुई तो वह पढाई बीच में ही छोड़ कर पिता की सहायता करने घर लौट आई। फिर वह एक अध्यापक बन गई, पहले न्यू रोशेल, न्यूयॉर्क में, और फिर रोचेस्टर के निकट। उसे अपना काम अच्छा तो लगता था, लेकिन यह उसे बहुत अनुचित लगा कि उसका वेतन वही काम करने वाले पुरुषों की अपेक्षा मात्र एक चौथाई था। जब उसने सेनेका फाल्स में होने वाले सम्मलेन और एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन के बारे में सुना, तो उसे लगा कि उसका एलिज़ाबेथ से मिलना लाज़िमी था।

सूज़न और एलिज़ाबेथ की जोड़ी जम गई। एलिज़ाबेथ, जो अब छः बच्चों की माँ थी, के लिए अब यात्रा कर पाना कठिन था। इसलिए वह व्याख्यान लिखती, और सूज़न उन्हें सभाओं में पढ़ती। दोनों ने मिल कर विवाहित महिलाओं के लिए संम्पत्ति के अधिकार का लक्ष्य हासिल किया। उस समय के कानून के अनुसार विवाहित महिलाओं को स्वयं संपत्ति रखने का अधिकार नहीं था। इस काम में कई वर्ष लगे, लेकिन अंततः १८६० में न्यूयॉर्क राज्य ने कानून बनाया जिससे विवाहित महिलाओं को स्वयं की कमाई हुई धनराशि और माता-पिता से मिली संपत्ति के ऊपर अधिकार मिल गया। यह तो केवल शुरुआत थी। अब सूज़न और एलिज़ाबेथ ने महिलाओं के लिए वोट का अधिकार पाने का निश्चय किया। लेकिन बहुत से लोगों का मत था कि महिलाएं इस अधिकार के योग्य नहीं हैं। लोगों की सोच को बदलना कोई आसान काम नहीं था।

दोनों महिलाओं ने इस विषय पर व्याख्यान देने की मुहिम चलाई, और इस विषय के याचना-पत्रों पर हज़ारों हस्ताक्षर एकत्र किये। एलिज़ाबेथ ने प्रचार पुस्तिकाएं लिखीं, जिन्हें बेच कर सूज़न ने पैसा जमा किया। उन्होंने "द रेवोल्यूशन" नामक एक समाचार-पत्र भी शुरू किया, और महिला अधिकार आंदोलन के इतिहास पर पुस्तकें छापीं।

१९०२ में जब एलिज़ाबेथ का देहांत हुआ, तो सूजन ने कहा, "मैं बेहद अकेला महसूस कर रही हूँ।" और चार वर्ष बाद जब उसका अपना अंतिम समय आया, तब तक केवल चार राज्यों, वायोमिंग, यूटा, कोलोराडो, और इडाहो ने महिलाओं को मताधिकार दिया था। अंततः १९२० में अमेरिका ने एक संविधान संशोधन पारित करके सभी महिलाओं को मत देने का अधिकार प्रदान किया। सूज़न और एलिज़ाबेथ के प्रयासों के बिना शायद यह संभव न हो पाया होता।

क्लारा बार्टन
१८२१-१९१२

घायलों को मेरे पास लाया गया, जो कई दिनों से सर्दी में ठिठुर रहे थे। वे घायल ठंडी बर्फ पर पड़े हुए थे, और उनकी परवाह करने वाला कोई न था।

- क्लारा बार्टन द्वारा फ्रेडरिक्सबर्ग के युद्ध का वर्णन।

१८२१ में क्रिसमस के दिन नार्थ ऑक्सफ़ोर्ड, मैसाचुसेट्स में एक नन्ही बच्ची का जन्म हुआ। उसका नाम रखा गया, क्लैरिस्सा हर्लो बार्टन। क्योंकि रोज़मर्रा के लिए यह नाम थोड़ा लम्बा था, इसलिए सब उसे क्लारा ही कहते। क्लारा अपने अन्य भाई-बहनों से बहुत छोटी थी। वे सब उसे बहुत स्नेह करने थे, और उसे बहुत सी बातें सिखाते थे, जैसे पढ़ना, लिखना, गणित, घुड़सवारी, और काष्ठकारी। उसकी मां सख्त होते हुए भी नरम दिल की थी। उन्होंने क्लारा को खिलौने और गुड़िया देने के बजाय उसे खाना बनाना, सिलाई करना व घर के अन्य काम-काज सिखाये।

क्लारा बहुत बुद्धिमान थी, लेकिन बहुत शर्मीली भी। जब वह ११ वर्ष की थी, उसका अधिकांश समय अपने बीमार भाई की देख-रेख करने, और उसका मन बहलाने में जाता था। यह अनुभव भविष्य में उसके बहुत काम आने वाला था। लोगों ने उसकी माँ से कहा कि क्लारा को और अधिक ज़िम्मेदारी लेने की ज़रूरत है, और उसके लिए स्कूल में पढ़ाना उचित रहेगा। इस प्रकार, १८ वर्ष की आयु में क्लारा एक कमरे का स्कूल चलाने लगी। कुछ बड़े लड़के बहुत शरारती थे, जिन्होंने अध्यापकों का जीना दूभर किया हुआ था। पहले ही दिन क्लारा ने छुट्टी के समय के साथ खेलों में भाग लेने की इच्छा जताई। वे लड़के खेलों में क्लारा की दक्षता देख कर दंग रह गए, कि वह कितनी तेज़ दौड़ सकती थी,और कितनी अच्छी तरह गेंद फ़ेंक लेती थी। इसके बाद उन लड़कों के साथ, या अन्य बच्चों के साथ कोई समस्या नहीं आई।

मुश्किल बच्चों को सँभालने में क्लारा ने बहुत सफलता प्राप्त की, और सभी इस बात को सराहने लगे। वह दस सालों तक एक के बाद दूसरे स्कूल के हालत सुधारने में लगी रही।

फिर १८५० में उसने अपनी स्वयं की पढाई पर ध्यान देने का निश्चय किया, और क्लिंटन न्यूयॉर्क में एक वर्ष के लिए अध्यापकों के स्कूल में दाखिल हो गई। इसके बाद वह फिर से न्यू जर्सी में पढ़ाने के लिए लौट आई। कुछ वर्षों बाद जब वह बॉर्डरटाउन न्यू जर्सी में थी, उसे यह जान कर बहुत बुरा लगा कि वहां मस्सचुसेट्स की तरह निःशुल्क स्कूल नहीं थे। माता-पिता को स्कूल की फीस चुकानी पड़ती थी, और यदि वे न चुका पाते, तो बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते थे। क्लारा ने स्कूल समिति को एक प्रस्ताव दिया - यदि उसे एक स्कूल दिया जाये, तो वह बिना वेतन के वहां पढ़ाएगी।

अगले ही दिन क्लारा को एक स्कूल मिल गया। वह स्कूल एक पुरानी बदहाल इमारत में था। पहले दिन केवल छः बच्चे ही आये। लेकिन दो साल बाद यह संख्या बढ़ कर ६०० हो गई थी, और स्कूल को एक नई इमारत भी मिल गई थी। फिर स्कूल समिति ने निर्णय लिया कि एक महिला को स्कूल नहीं चलाना चाहिए, और उन्होंने एक पुरुष प्रधानाचार्य को नियुक्त कर दिया। क्लारा को एक बात पर इतना क्रोध आया कि उसने न केवल वह स्कूल, बल्कि अध्यापन का काम ही छोड़ दिया। उसे वाशिंगटन डी सी के डाक विभाग में नौकरी मिल गई, और शायद वह पहली महिला जन-सेवक नियुक्त की गई।

अब्राहम लिंकन के राष्ट्रपति चुने जाने के कुछ समय बाद ही गृह युद्ध प्रारम्भ हो गया। अपने काम के साथ ही, क्लारा देखती कि लड़ाई के मैदान से घायल और खून से लथपथ सैनिक लौट कर आते, और उसे उनकी चिंता होती। उसने अख़बार ने विज्ञापन देकर जनता से इस सैनिकों के लिए भोजन, दवाइयों और कपड़ों की मांग की। जल्द ही उसे इतनी सामग्री मिलने लगी, कि उसके पास रखने को जगह न थी। वह यह सब सामान लड़ाई के मैदान तक पहुँचाना चाहती थी, जहाँ उसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

लेकिन युद्ध विभाग सकते में था, क्योंकि महिलाओं का युद्ध क्षेत्र में जाना वर्जित था। क्लारा बार-बार अनुमति मांगती रही, और अंततः उसे व उसके तीन साथियों को यह अनुमति दे दी गई। आश्चर्यजनक रूप से, उसे सामान ढोने के लिये गाड़ियां व खच्चर भी उपलब्ध करा दिए गए। वहां युद्ध क्षेत्र में क्लारा सैनिकों के लिए भगौने भर-भर कर सूप और काफ़ी बनाती, और सैकड़ों की तादाद में डबलरोटियां बना कर उनको बांटती।

क्लारा समझती थी कि घायल सैनिक शायद हस्पताल पहुँचने तक ज़िंदा न बच पाएं। इसलिए उसने लड़ाई के मैदान में ही उनका इलाज करना शुरू कर दिया, जो कि एक बिलकुल ही नया प्रयास था। उसने तम्बूओं और बसों को हस्पतालों में तब्दील किया, और घायलों की देख-रेख शुरू कर दी। वह इस बात पर अड़ गई कि वह इन हस्पतालों में शत्रु सेना के घायलों का भी इलाज करेगी, और इस बात से भी युद्ध विभाग बहुत रुष्ट हुआ। लोग क्लारा को अब युद्ध क्षेत्र की देवी कह कर बुलाते थे।

१८६५ में जब गृह युद्ध समाप्त हुआ, क्लारा ने अपने पैसे से एक संगठन की स्थापना की, जो लापता सैनिकों को खोजने और उनके मृत शरीरों की पहचान करने का काम करता था। इस सब कठिन परिश्रम के कारण वह बहुत दुर्बल और अस्वस्थ हो गई, और १८६९ में कुछ विश्राम पाने के लिए स्विट्ज़रलैंड चली गई।

वहां जिनेवा में उसने अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस के बारे में सुना, जो कि युद्ध में घायल व बीमार सैनिकों की सहायता करने वाला एक संगठन था। अमेरिका वापस लौट कर क्लारा ने राष्ट्रपति रुदरफोर्ड हेज़ से इस संगठन में शामिल होने की गुज़ारिश की। लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। क्योंकि अधिकांश अमेरिकी लोगों का मानना था कि अब अमेरिका में कभी युद्ध नहीं होगा। इसलिए क्लारा ने एक शांतिकालीन रेड क्रॉस की स्थापना की पैरवी की, जो भूकंप, बाढ़, सूखे व अन्य प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों की सहायता कर सके।

१८८१ में कुछ अन्य लोगों की मदद से क्लारा ने अमेरिकी रेड क्रॉस संस्था की स्थापना की। उसे इस संस्था के प्रथम अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया। बहुत वर्षों बाद, जब उसकी आयु साठ को पार कर चुकी थी, क्लारा जॉन्सटाउन पेनसिलवेनिया गई, जहाँ कुछ दिन पहले ही भयंकर बाढ़ का प्रकोप हुआ था। वह पांच महीने तक वहां रुकी, और एक तंबू में रह कर और एक टीन के बक्से को मेज़ की तरह इस्तेमाल करते हुए बाढ़-पीड़ितों की राहत का काम करती रही। स्पेनिश-अमेरिकन युद्ध के दौरान क्लारा एक घोड़ागाड़ी में सवार हो युद्ध के मैदान में पहुंच गई, और बीमारों के भोजन और इलाज का प्रबंध करने लगी। उसने क्यूबा के उन अनाथ बच्चों के लिए एक अनाथालय भी बनाया जिनके माता-पिता युद्ध में मारे गए थे, या लापता हो गए थे।

९२ वर्ष की आयु में जब क्लारा का देहांत हुआ, उसके पार्थिव शरीर को दफ़नाने के लिए ग्लेन इको, मेरीलैंड से, जहाँ वह रह रही थी, नार्थ ऑक्सफ़ोर्ड, मैसाचुसेट्स ले जाया गया। उसके ताबूत को ले जाने वाले गाड़ीवान ने बताया कि किस प्रकार क्लारा बार्टन ने उसके पिता की जान बचाई थी, जो गृह युद्ध से समय युद्ध क्षेत्र में घायल हो मरणासन्न पड़े थे। अब इस बेटे का उस ऋण को चुकाने का समय था, जो उसने इस पवित्र आत्मा को उसके अंतिम विश्राम स्थल तक पहुंचा कर पूरा किया।

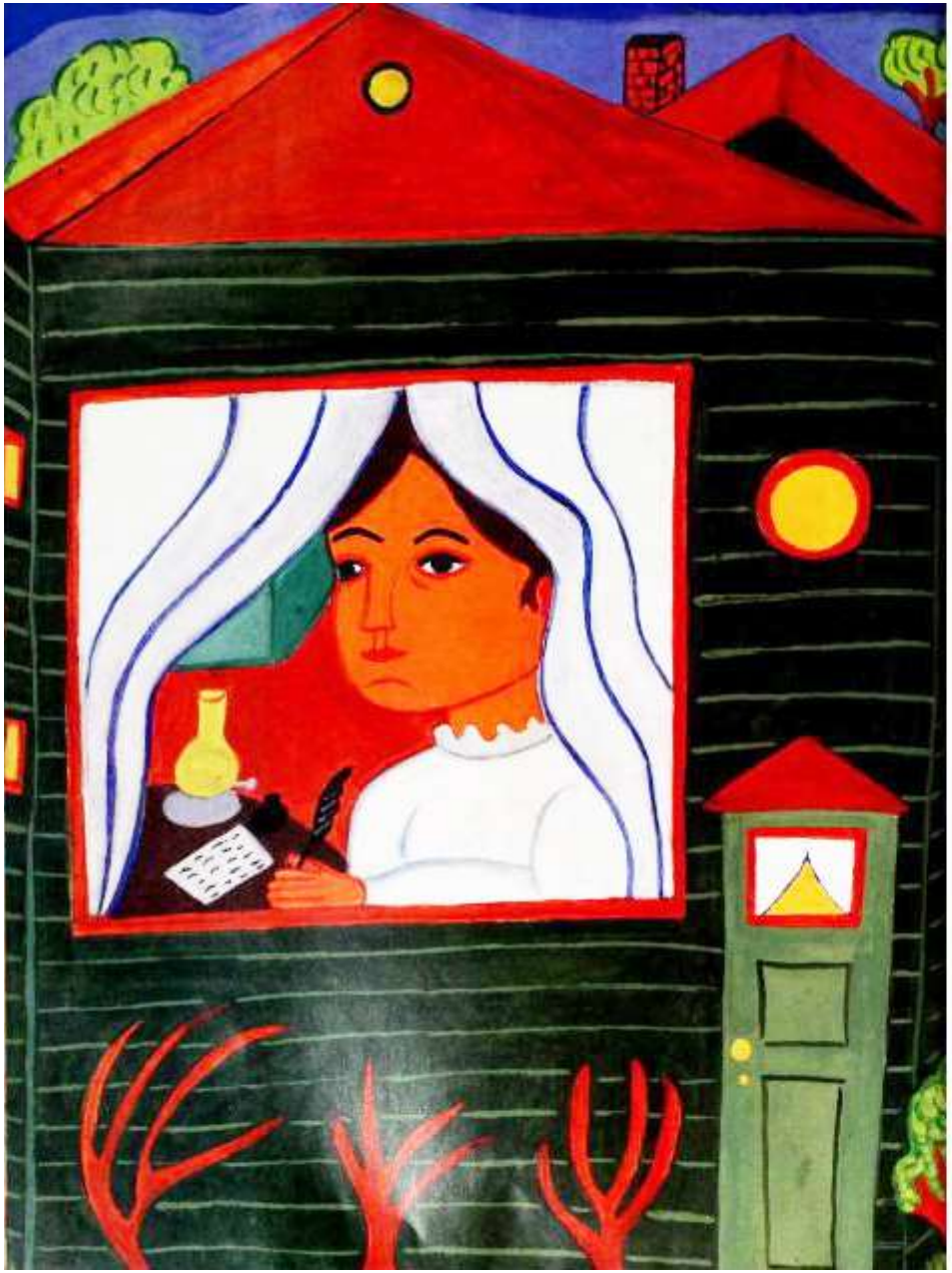

एमिली डिस्किंसन
१८३०-१८८६

यदि मैं कोई पुस्तक पढ़ूं, और मेरा पूरा शरीर इतना ठंडा हो जाये कि कोई भी आग उसे गर्मी न पहुँच सके, तो मैं समझ जाती हूँ कि यही उत्तम कविता है। अगर मुझे ऐसा महसूस हो जैसे मेरा मस्तिष्क अपने स्थान से हिल गया है, तो वह सही मायने में कविता है।

- एमिली डिस्किंसन का वक्तव्य, थॉमस वेन्टवर्थ हिग्गिन्सन के साथ हुए एक साक्षात्कार में।

एमिली एक संकोची लड़की थी। लेकिन फिर भी उसके पास अपने शहर एमहर्स्ट, मैसाचुसेट्स में हो रही केक बनाने की पार्टियों के लिए, स्लेज की सवारी के लिए, पिकनिकों व अन्य पार्टियों के लिए निमंत्रण आते ही रहते थे। उसे अपनी पुस्तकें और अपना शब्दकोष, जिन्हें वह अपना सबसे अच्छा दोस्त मानती थी, बहुत अच्छे लगते थे। एक लड़की होने के बावजूद, उसे अपने समय के हिसाब से बहुत अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। उसने छः वर्ष तक एमहर्स्ट अकादमी में पढाई की, और फिर नज़दीक ही माउंट होलीओक महिला विद्यालय में। लेकिन यह विद्यालय एमिली को पसंद नहीं आया, जहाँ लड़कियों को सार्वजानिक रूप से खड़े होकर अपने धर्म की घोषणा करनी होती थी। इसलिए एक वर्ष बाद ही वह घर वापस लौट आई।

अपने बचपन की सहेली सोफिया हॉलैंड के असमय देहांत से एमिली को बड़ा धक्का लगा, और धीरे धीरे वह संसार व समाज से कटने सी लगी। हालांकि वह इस बीच कई जगह गई, जैसे वाशिंगटन डी सी, जहाँ उसके पिता अमेरिकी संसद के सदस्य थे, और फ़िलेडैल्फ़िया, और फिर अपनी आंखों के उपचार के लिए बोस्टन भी, लेकिन संसार से उसकी विरक्ति बढ़ती ही गई।

फिर स्थिति यहाँ तक पहुंच गई, कि एमिली ने अपने घर की चहारदीवारी से बाहर निकलना ही छोड़ दिया। धीरे धीरे उसने आगंतुकों से मिलना भी छोड़ दिया, और लोगों को उससे बंद दरवाज़े के बाहर से ही बात करनी पड़ती थी। एक बार उसने एक ताज़ी गर्म डबलरोटी एक टोकरी में रख कर अपने कमरे की खिड़की के नीचे खेल रहे बच्चों के लिए लटका दी। बच्चों ने बहुत प्रसन्न होकर यह डबलरोटी ले ली। उसके बाद उन्होंने कई बार ऊँचे पेड़ों के पीछे स्थित उस खिड़की में एमिली का चेहरा देखने की कोशिश की, लेकिन वे शायद ही कभी उसे देख पाए होंगे। और जब कभी वह दिखाई दी भी, तो हमेशा सफ़ेद कपड़ों में, क्योंकि उसने रंगीन कपडे पहनना बिलकुल बंद कर दिया था।

लेकिन अपने अंतर्मन में एमिली एक बहुत समृद्ध और रचनात्मक जीवन जी रही थी। दिन भर, अपने घरेलू काम-काज, जैसे डबलरोटी पकाना, बागबानी करना, पूरियां तलना, आदि के साथ-साथ वह अख़बारों की खाली जगहों व अन्य कागज़ के टुकड़ों पर कवितायेँ लिखती रहती थी। फिर अपने कमरे में अकेली बैठ कर वह इन कविताओं को सफाई से दूसरे पन्नों पर उतार लेती। उसने ऐसे बहुत से पन्नों को सुई-धागे से सिल कर एक किताब बना ली, और उसे एक बक्से में रख, ताला डाल कर अपनी लकड़ी की अलमारी में छिपा दिया।

उसकी कवितायेँ लीक से हट कर, कुछ चौंकाने वाली,और बहुत सशक्त और सुन्दर होती थीं। वह बार-बार जिन विषयों पर लौट कर आती थी, वे थे प्रकृति, प्रेम, मृत्यु और ईश्वर। वह प्राकृतिक संसार के ताने-बाने का बड़ी बारीकी से अध्ययन करती। एमिली की कवितायेँ प्रायः छोटी ही होती थीं, और वह उनकी लय के साथ बड़ी निर्भीकता से नए प्रयोग करती थी। अक्सर वह उन्हें गीतों जैसा रूप दे देती थी। एक बिल्ली के बारे में लिखी उसकी एक कविता नीचे दी गई है।

वह एक गौरैया को देख कर, एक दबी सी हंसी हंसती है -
-
जमीन से सट कर, वह रेंगती हुई आगे बढ़ती है।
फिर इतनी तेज़ी से दौड़ती है, जैसे उसके पांव ओझल हो गए हों।
उसकी आँखें बड़ी होकर गोल कंचों सी हो गईं।

उसके जबड़े कंपकंपा रहे हैं, - भूख।
उसके दांत बेसब्र हैं।
वह छलांग मारती है, लेकिन गौरैया फुर्ती से उड़ जाती है।
हाय, अब वह धरती पर पस्त पड़ी है।

एक स्वादिष्ट भोजन की आशा धराशायी।
लार जीभ से टपकती।
वह स्वादिष्ट भोजन का सुख।
जो हाथों से फिसल गया।

एमहर्स्ट में उसका जीवन शांत लेकिन फलप्रद रहा। वह छोटे घरेलू कामों में और पत्र लिखने में व्यस्त रहती। उसके लिखे पत्र, जो अभी भी उपलब्ध हैं, में एमिली का आकर्षक व्यक्तित्व साफ़ ,झलकता है, और वह एक अनूठे और पुराने ढंग के दोस्त की तरह नज़र आती है। एमिली अपने कुत्ते कार्लो के साथ दूर तक टहलने जाया करती थी। जब उसकी मां बीमार थी, उसने बड़े धैर्य से उसकी तीमारदारी की। और अपनी कवितायेँ तो वह लगातार लिखती ही रहती थी।

एमिली अपनी कवितायेँ दूसरों को बहुत कम दिखाती थी, और उसके कठोर मिजाज़ वाले उदासीन पिता ने तो कभी उसकी कोई कविता नहीं पढ़ी। थॉमस वेन्टवर्थ हिग्गिन्सन, जो कि एक जाने-माने लेखक और साहित्य आलोचक थे, और जिनके साथ एमिली पत्राचार करती रहती थी, ने अवश्य कुछ पढ़ी थीं। हिग्गिन्सन ने एमिली को अपनी कवितायेँ प्रकाशित करने के लिए बिलकुल भी प्रेरित नहीं किया। उस समय वे उसकी असीम प्रतिभा को शायद ठीक से समझ नहीं पाए थे। लेकिन बाद में उनका मन शायद बदल गया। जो भी हो, एमिली ने उनकी यह बात स्वीकार की, और उसके सारे जीवन में उसकी केवल सात कवितायेँ ही प्रकाशित हो सकीं।

जब एमिली का देहांत हुआ तो लावीनिया को उसकी १८०० कवितायेँ बड़े करीने से संजोई हुई उसके सामान में मिलीं। इतने विशाल संग्रह को देख कर वह चकित रह गई, और उसकी विलक्षण प्रतिभा को उसने पहचाना। फिर तो वह उन्हें प्रकाशित करवाने और उनके प्रसार में जी-जान से जुट गई। यह उसके इस समर्पित प्रयास का ही फल है, कि आज एमिली डिकिन्सन की गणना अमेरिका के सर्वाधिक श्रेष्ठ और मौलिक कविताकारों में होती है।

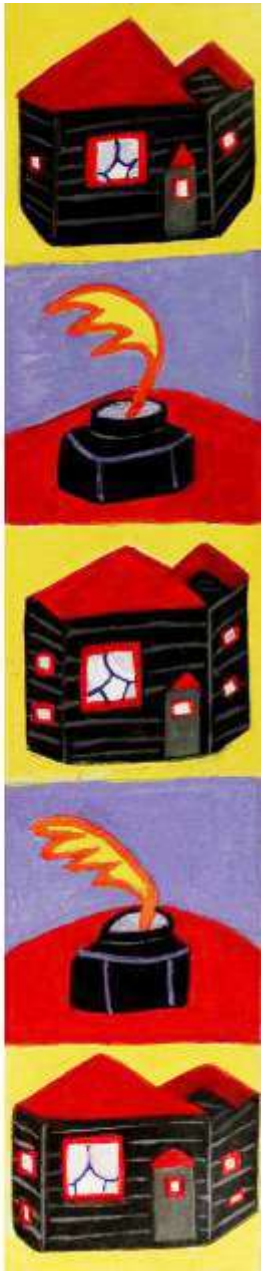

मैरी कॉसट
१८४४-१९२६

मैं जाती, और खिड़की से अपनी नाक चिपका कर अंदर झांकती, और उसकी कला को आत्मसात करने का प्रयास करती। उस कला ने मेरा जीवन बदल दिया। मैंने कला को ठीक वैसा ही पाया, जैसा मैं उसे देखना चाहती थी।

-- मैरी कॉसट का लेखन, एड्गर डेगस की कला के बारे में।

सात वर्ष की मैरी एकटक खड़ी देख रही थी, कैसे वह कलाकार अपने ब्रश को रंग में डुबोता है। उस कलाकार को मैरी के तीनों भाइयों, एलेग्जेंडर, गार्डनर और रॉबी के चित्र बनाने लिए बुलाया गया था। मैरी को भी अच्छा लगता, अगर उसे भी अपना चित्र बनवाने का अवसर मिलता। लेकिन उससे कहीं अधिक रुचिकर था इस कलाकार को काम करते हुए देखना। कैसे शुरू में वह कैनवस पर रंगों के बेतरतीब से धब्बे बनाता है, और अंत में उनमें से व्यक्ति का हूबहू चेहरा उभर कर सामने आ जाता है। मैरी पहली बार किसी कलाकार को चित्र बनाते देख रही थी, हालाँकि तब वह नहीं जानती थी कि उसके जीवन की दिशा भी उसी ओर निर्धारित हो चुकी थी।

मैरी अपने चार भाई बहनों के साथ पेनसिलवेनिया के अलेघेनी शहर में रहती थी। इस घटना के कुछ समय बाद ही उसका परिवार फ्रांस की राजधानी पेरिस में जाकर बस गया, जहाँ उसे लूवर जैसे महान और विशाल संग्रहालयों को देखने का अवसर मिला। उसके बाद वे जर्मनी चले गए, लेकिन जब रॉबी की एक बीमारी के बाद दुःखद रूप से मृत्यु हो गई, तो शोकाकुल परिवार वापस अमेरिका लौट आया।

सोलह वर्ष की आयु में मैरी ने पेनसिलवेनिया ललित कला अकादमी में प्रवेश ले लिया, जहाँ उसने मानव शरीर के चित्र बनाना सीखा। लेकिन वह चाहती थी कि वापस यूरोप जाकर लेओनार्दो डा विन्ची, रेम्ब्रांट और टिटियन की कलाकृतियों का अध्ययन करे। मैरी एक पेशेवर कलाकार बनना चाहती थी, मात्र शौकिया कलाकार नहीं। यह विचार ज़रा असाधारण था, और जब उसके पिता ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, "इससे तो शायद तुम्हारा मर जाना बेहतर होगा।" लेकिन अंततः, मैरी उन्हें समझाने में कामयाब हुई, और उन्होंने उसे माँ के साथ भेज दिया।

पेरिस में मैरी ने मंजे हुए कलाकारों के साथ कला का अध्ययन किया, और जब उसकी एक कलाकृति, "एक मैन्डोलिन वादक" को १८६८ की पेरिस सैलून की कला प्रदर्शनी में स्थान मिला, तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। जल्दी ही सैलून ने उसकी अन्य कृतियों को भी स्थान दिया। सत्रहवीं सदी से ही नौजवान कलाकार यही सपना संजोते थे कि उनकी कलाकृतियों को भी सैलून में जगह मिले, जो कि फ्रांस की सबसे प्रामाणिक वार्षिक कला प्रदर्शनी थी।

फिर मैरी को फ्रांस के कलाकार एड्गर डेगस के बारे में पता चला। और फिर तो उसके कला सम्बन्धी जीवन में एक नाटकीय मोड़ आया। दोनों की मुलाकात हुई और उनमे ऐसी प्रगाढ़ मित्रता हुई जो अगले चालीस वर्ष तक चलने वाली थी। डेगस से प्रेरणा पाकर मैरी अपनी कला में नए और साहसी प्रयोग करने लगी, जिनमें अधिक समतल चित्र-शैली और चमकीले रंगों का प्रयोग शामिल था। उसने सैलून में अपनी कला भेजना करना बंद कर दिया, और इम्प्रेशनिस्ट कहे जाने वाले आधुनिक कलाकारों के एक समूह में अपनी कला का प्रदर्शन करने लगी। हालाँकि इन आधुनिक कलाकारों द्वारा प्रयुक्त चौड़ी रेखाओं और चमकदार रंगों का कला-समीक्षक बहुधा मखौल ही उड़ाते थे।

ये समीक्षक इम्प्रेशनिस्ट कलाकारों की जिस बात की विशेष रूप से आलोचना करते थे, वह था उनका विषयवस्तु का चुनाव। ऐतिहासिक या धार्मिक विषयों को न चुन कर वे रोज़मर्रा के जीवन से सम्बंधित चित्र बनाते थे। मैरी ने शुरुआत की अपनी बहन का एक चित्र बना कर जिसमें वह करघा चला रही थी। और उसने एक चित्र बनाया एक नौजवान लड़की का, रंगमंच पर अभिनय करते हुए। फिर उसने एक चित्र बनाया जिसमें एक माँ अपने बच्चे को नहला रही थी, और एक जिसमें एक बालक अपनी माता का गाल सहला रहा है, और फिर एक महिला का जो अपने हृष्ट-पुष्ट बालक को गोदी में लिए नौका में बैठी है। इन छायाचित्रों में वह अपने परिवार के लोगों या मित्रों को ही चित्रित करती थी। उसकी कृतियों में छोटे बच्चों के प्रति उसकी कोमल भावनाओं के प्रदर्शन के बावजूद, उसके स्वयं के बच्चे कभी नहीं हुए। "एक महिला चित्रकार को कुछ मौलिक त्याग करने के लिए सक्षम होना ही चाहिए", उसने एक बार साक्षात्कार में कहा था। शायद वह कहना चाहती थी कि अपनी कला साधना के साथ-साथ एक परिवार की देख-रेख कर पाना कितना मुश्किल होगा।

समय के साथ मैरी की ख्याति बढ़ती गई, और उसकी कृतियाँ कला-प्रेमियों में बहुचर्चित हो गईं। उसे शिकागो वर्ल्ड कोलम्बियन एक्सपोज़िशन की महिलाओं से सम्बंधित इमारत पर एक १२ फुट चौड़े और ५८ फुट ऊंचे चित्र को बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। इससे उसके पिता भी बहुत प्रभावित हुए, और उन्होंने कहा, "उसने केवल कला जगत में ही नहीं, बल्कि आम जनता के बीच भी अपनी ऐसी पहचान बना ली है, कि जब तक वह चित्रकारी करती रहेगी, लोग उसे भुला नहीं सकेंगे।" उसने पेरिस के बाहर एक बड़ा घर खरीद लिया, जहाँ रह कर वह चित्र बनाती थी, अपने गुलाब के पौधों की देख-रेख करती, और अपने परिवार व मित्रों की मेज़बानी करती थी।

यद्यपि मैरी ने अपना अधिकांश जीवन यूरोप में बिताया, उसने स्वयं को हमेशा पूर्णतः अमेरिकन ही माना, और उसे इस बात से दुःख होता था कि उसके अपने देश में बहुत कम उच्च कोटि की कलाकृतियां जनता के देखने के लिए उपलब्ध थीं। उसने अपने परिवार जनों और मित्रों की सहायता की जिससे वे उत्कृष्ट कलाकृतियों का संकलन कर सकें, जिन्हें बाद में संग्रहालयों को प्रदान कर दिया जाता था, क्योंकि वह चाहती थी कि अमेरिका के नौजवान कलाकारों को भी वैसे ही प्रेरणा मिले जैसे उसे यूरोप में मिली थी।

मैरी बयासी वर्ष की अवस्था तक जीवित रही, और तैल - चित्रों व अन्य प्रकार की कलाकृतियों पर कार्य करती रही, जब तक उसकी आँखों की रौशनी ने उसका साथ छोड़ न दिया। और जब ऐसा हुआ तो वह अन्य आंदोलनों में योगदान देने लगी, जैसे महिला-अधिकार आंदोलन जो उन दिनों अमेरिका में चल रहा था। अपनी मृत्यु से कुछ पहले उसने लिखा था, "जैसा मैं चाहती थी, बिलकुल वैसा तो नहीं कर सकी, लेकिन मैंने उसके लिए पूरे प्रयत्न से संघर्ष अवश्य किया।" बहुतों का मानना है कि उसने इस संघर्ष में विजय भी पाई।

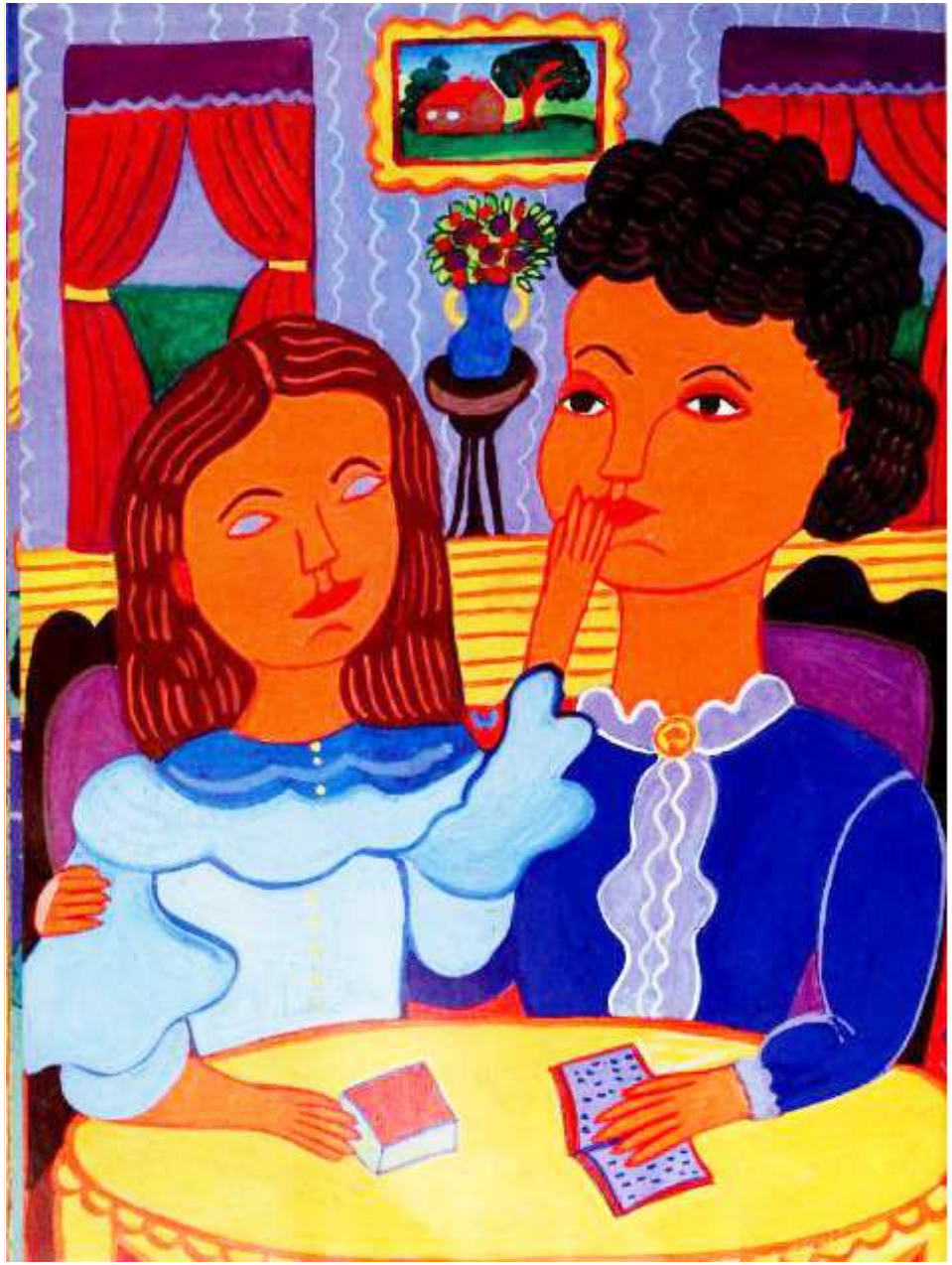

हेलेन केलर
१८८०-१९६८

जब तक मेरी सांसें चल रही हैं, मैं दिव्यांगों के लिए कार्य करती ही रहूंगी।

- हेलेन केलर द्वारा अपनी १८वीं वर्षगांठ पर एक पत्रकार को दिया गया वक्तव्य

कप्तान केलर और उनकी पत्नी बेबस देख रहे थे, अपनी बच्ची हेलेन को बुखार में कांपते और कराहते। डॉक्टर भी कुछ नहीं कर पा रहे थे,और केलर दम्पति आशंकित थे कि शायद वह बचेगी नहीं। लेकिन कुछ चमत्कार सा हुआ, और हेलेन की हालत सुधरने लगी। लेकिन उसकी देखने और सुनने की क्षमता जा चुकी थी, और उसे अपना सारा जीवन एक अँधेरी और निःशब्द दुनिया में बिताना था।

तुस्कुम्बिआ, अलाबामा में उसका प्रारम्भिक जीवन काफी कठिन था। हालाँकि हेलेन बुद्धिमान थी, लेकिन वह अपनी असमर्थता के कारण बहुत कुंठित रहती थी। जब वह दौड़ने या खेलने का प्रयत्न करती तो वह या तो गिर जाती, या किसी खम्भे या दीवार से टकरा जाती थी। अन्य बच्चे उससे कतराते थे, क्योंकि वह या तो उन्हें मारती-पीटती थी, या उनके खिलौने तोड़ देती थी। जब उसकी माँ ने उसके जन्मदिन के लिए केक बनाया, तो उसकी महक सूंघ कर वहां पहुंची, और उसका कुछ हिस्सा खाकर बाकी छिन्न-भिन्न कर दिया। उसकी माँ जब बचे हुए केक को ले जाने जाने लगी तो वह पैर पटक-पटक कर रोने-चीखने लगी। जब उसकी माँ ने उसे चुप कराने की कोशिश की, तो वह बाहर भाग गई, और एक काँटों भरी झाड़ी में जा टकराई। जन्मदिन के भोजन का कार्यक्रम बेकार हो गया। तब केलर दम्पति को समझ आया कि उन्हें अपनी बेटी के लिए किसी की सहायता लेनी होगी।

इस घटना के कुछ समय बाद वे वाशिंगटन गए, जहाँ हेलेन की मुलाकात टेलीफ़ोन के अविष्कारक एलेग्जेंडर ग्रैहम बेल से हुई। डा. बेल अनेक वर्षों से बहरे लोगों की सहायता करते आ रहे थे। उन्होंने हेलेन को अपनी गोद में बिठाया। हेलेन ने उनकी दाढ़ी को छुआ, और उनकी जेब-घडी को छू कर उसकी टिक-टिक को महसूस किया। डा. बेल ने उसके माता-पिता को बोस्टन के एक विशेष स्कूल के बारे में बताया, जहाँ एक दृष्टिहीन और बधिर बालिका को दूसरों से बातचीत करना सिखाया गया था। शायद वह स्कूल केलर परिवार के लिए किसी शिक्षक को भेज सके।

जल्दी ही हेलेन के चौंकने के बारी थी, जब एक अनजान महिला, ऐन सलिवन, उसके जीवन में आ गई। ऐन पहले लगभग दृष्टिहीन थी, लेकिन अब एक ऑपरेशन के बाद वह देख सकती थी। वह अब हेलेन की सहायता करने आई थी। उसने हेलेन को एक गुड़िया दी, और फिर उसका हाथ पकड़ कर उसकी हथेली पर अपनी उँगली से कुछ पैटर्न सा बनाया। ऐन उसकी हथेली पर D O L L लिख रही थी। हेलेन कुछ हैरान थी, लेकिन जल्दी ही उसने पैटर्न को समझना और उसकी नक़ल करना सीख लिया। जब वे बिल्ली के साथ खेल रहे थे तब C A T लिखा गया। C A K E का मतलब था कि उसे कोई स्वादिष्ट चीज़ खानी थी, और दूध पीने के लिए M। L K लिखा गया। लेकिन हेलेन यह नहीं समझ पाई कि वह भाषा के शब्द लिख रही थी।

"मिस एनी" के साथ हेलेन का जीवन उतार-चढ़ावों से भरा हुआ था। जब एनी उसे छोटे मोटे खिलौने देती, या उसे जंगल में घूमने-फिरने या घोड़े की सवारी करने ले जाती तो उसे अच्छा लगता था। लेकिन मिस एनी बड़ी अनुशासनप्रिय भी थीं। भोजन के समय खाना हाथ में लेकर मेज़ के इधर-उधर घूमने की बिलकुल इजाज़त नहीं थी। हेलेन को अपनी कुर्सी में बैठ कर नेपकिन लगा कर चम्मच से ही खाना होता था। इन नियमों के कारण हेलेन को बहुत गुस्सा आता था। और वह मिस एनी को मार भी देती थी। एक बार तो उसने एनी को एक कमरे में बंद करके चाबी छुपा दी।

फिर एक दिन वे दोनों बाहर हैंड-पंप के पास थे। हेलेन ने पानी पीने के लिए एक हाथ नल के नीचे लगा रखा था, और एनी पम्प चला रही थी। एनी ने हेलेन का दूसरा हाथ पकड़ा, और उस पर लिखा W A T E R। अचानक हेलेन के मुख की मुद्रा बदल गई। उसने कई बार स्वयं अपने हाथ पर W A T E R लिखा। फिर उसने धरती की तरफ इशारा किया, तो एनी ने लिखा G R O U N D। अचानक ही हेलेन को यह समझ आ गया था कि उसकी हथेली पर जो चिन्ह बनाये जा रहे थे वे असल में शब्द थे, जिनका सम्बंध वस्तुओं, व्यक्तियों, जानवरों, या अन्य किसी भी चीज़ से हो सकता था। फिर हेलेन ने एनी की ओर इशारा किया, तो एनी ने उसके हाथ पर लिखा T E A C H E R, और उसके बाद एनी का नया नाम यही हो गया। उस रात हेलेन इतनी खुश थी, कि पहली बार उसने एनी का गाल चूम कर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की।

फिर एनी ने हेलेन को ब्रेल लिपि सिखाई, जिसके द्वारा दृष्टिहीन लोग कागज़ पर उभरे हुए बिंदुओं पर अपनी उंगलियां फिरा कर पढ़ सकते हैं। जैसे जैसे हेलेन नई बातें सीखती गई, उसके व्यवहार में सुधार आने लगा। जल्दी ही वह अपने निजी काम, जैसे कपडे पहनना, अपना बिस्तर ठीक करना, अपने खिलौने समेटना इत्यादि स्वयं ही करने लगी। यहाँ तक कि उसने बोलना भी सीख लिया, हालाँकि वह बहुत धीरे-धीरे और बड़ा प्रयत्न करके ही बोल पाती थी। बोलना सीखने के लिए वह बोलने वाले व्यक्ति के होठों पर उंगलियां रख कर महसूस करती, और फिर अपने होठों को भी वैसे ही हिलाने की कोशिश करती।

हेलेन एक आदर्श छात्रा बन गई, पहले न्यूयॉर्क के राइट-हुमैसॉन स्कूल में, और फिर कैंब्रिज बालिका स्कूल में। अंततः १९०० में उसे रैडक्लिफ कॉलेज में प्रवेश मिल गया। जब कक्षाएं प्रारम्भ हुईं तो एनी भी उसके साथ कक्षा में बैठती, और अध्यापक जो बोलते, वह हेलेन की हथेली पर लिखती। अंग्रेजी भाषा उसका सबसे प्रिय विषय था। उसके कई लेख प्रकाशित भी हुए, और एक पत्रिका ने उसे अपनी जीवन गाथा लिखने का प्रस्ताव भी दिया। जब हेलेन ने रैडक्लिफ़ में पढाई पूरी कर ली, तो वह और एनी बॉस्टन के निकट रेन्थम शहर में रहने चले गए। एनी का विवाह जॉन मैसी से हो गया, जो कि रैडक्लिफ़ में हेलेन के अध्यापक रह चुके थे, और वह भी उन दोनों के साथ रहने लगे।

हेलेन ने दृष्टिहीनों और बधिरों की आवश्यकताओं पर प्रकाश डालने के लिए व्याख्यान देने प्रारम्भ कर दिए। उसके ही प्रयासों से दृष्टिहीनों और बधिरों के शिक्षण के लिए अनेक संस्थानों की स्थापना की गई। उसका एक लक्ष्य यह भी था कि ब्रेल लिपि में अधिक से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो सके। दृष्टिहीनों के लिए एक राष्ट्रीय पुस्तकालय भी उसके ही प्रयासों से स्थापित किया गया।

जब अमेरिकन दृष्टिहीन न्यास की स्थापना हुई, तो हेलेन भी उस संस्था से जुड़ कर कार्य करने लगी। फिर हेलेन की माँ का देहांत हो गया, और जल्दी ही एनी भी नहीं रही। हेलेन का जीवन उन दोनों के बिना बहुत सूना हो गया।

फिर भी उसने काम करना नहीं छोड़ा। १९४१ में जब अमेरिका दूसरे विश्व युद्ध में सम्मिलित हुआ, तो राष्ट्रपति फ्रेंक्लिन रूज़वेल्ट ने हेलेन से अनुरोध किया कि वह उन सैनिकों की सहायता करे जो युद्ध में अपनी दृष्टि खो बैठे थे। जब संयुक्त राष्ट्र संस्था ने "हेलेन केलर विश्व अभियान" की शुरुआत की, तो हेलेन ने स्वयं को बड़ा गौरवान्वित महसूस किया। उसे लगा कि अब बहुत से देशों के दृष्टिहीन और बधिर बच्चों तक मदद पहुँच सकेगी। १९६८ में जब हेलेन केलर का देहांत हुआ, आत्म-सम्मान और शिक्षा का उसका सन्देश सारे विश्व में पहुँच चुका था।

एलेनोर रूज़वेल्ट
१८८४ - १९६२

सार्वभौमिक अधिकारों की शुरुआत आखिर होती कहाँ से है ? छोटी छोटी जगहों से, अपने घरों के आस- पास.... हर व्यक्ति की निजी दुनिया में..... जहाँ प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बालक अधिकार पूर्वक मांग करता है, न्याय की, सामान अधिकारों की, और भेद- भाव रहित आत्म सम्मान की।

-- एलेनोर रूज़वेल्ट, राष्ट्र संघ में दिए एक व्याख्यान में।

दादी माँ। एलेनोर की माँ उसे इसी नाम से बुलाती थीं, क्योंकि वह बड़ी गंभीर और संकोची प्रवृत्ति की थी। उसकी माँ को अक्सर उससे निराशा होती थी। वह एलेनोर से कहती, "तुम अधिक सुन्दर तो हो नहीं, इसलिए कम से कम सलीके से रहना तो सीखो।" एलेनोर को अपने सहृदय पिता का साथ अधिक प्रिय था। लेकिन कभी कभी उनका व्यवहार भी थोड़ा अजीब होता था। बहुत वर्षों बाद एलेनोर को पता लगा की उसके पिता को शराब की लत थी। अधिक पीने के बाद वह अजीब बातें कहते और करते थे। जब तक वह दस वर्ष की हुए, उसके माता-पिता और उसके छोटे भाई का भी देहांत हो गया।

एलेनोर और उसके बड़े भाई का पालन-पोषण उनकी दादी ने किया। हालाँकि एलेनोर अपनी बेरुख सी दादी को खुश रखने की भरसक कोशिश करती, लेकिन वह उसमें अधिक रूचि नहीं दिखाती थीं। जब एलेनोर इंग्लैंड में लड़कियों के स्कूल "एलेंसवुड" को चली गई, तो उसकी दादी ने जैसे राहत की साँस ली। इंग्लैंड में उसका समय अच्छा गुज़रा। श्रीमती सोवेस्टर, जो स्कूल की निदेशक थीं, उसे अच्छी तरह समझती थीं, और उसे प्रेरित भी करती थीं। वहां एलेनोर के अनेकों दोस्त बन गए, और जब वह अमेरिका लौटी तो एक नए आत्म-विश्वास से भरी थी।

एलेनोर को विरासत में इतनी संपत्ति मिली थी, कि उसे काम करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन फिर भी वह कुछ सार्थक कार्य करना चाहती थी। इसलिए उसने न्यूयॉर्क के एक निर्धन इलाके के स्कूल में अवैतनिक रूप से पढ़ाना शुरू कर दिया। उसके एक दूर के सम्बन्धी फ्रेंक्लिन को इस बारे में पता चला। उसे एलेनोर के बारे में और जानने की जिज्ञासा हुई। और जब दोनों एक दूसरे से परिचित हो गए, तो उसने एलेनोर के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा।

एलेनोर का वैवाहिक जीवन बड़ा व्यस्त था। दस वर्षों में उसके छः बच्चे हुए, जिनमे एक की शिशु अवस्था में ही मृत्यु हो गई। इसलिए एलेनोर के पास हमेशा ही कुछ न कुछ काम रहता था, या तो बच्चों की देखभाल का, या फिर अपने पति के व्यवसाय में उसकी सहायता करने का। पहले फ्रेंक्लिन ने कानून की शिक्षा प्राप्त की, और फिर अपना राजनीतिक जीवन न्यूयॉर्क राज्य के सीनेटर के रूप में किया। फिर राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने उसे नौसेना विभाग का सहायक सचिव नियुक्त कर दिया, और रूज़वेल्ट परिवार वाशिंगटन डी सी में रहने लगा।

वाशिंगटन में एलेनोर का एक नया जीवन आरम्भ हुआ। पहले विश्व युद्ध के समय वह रेड क्रॉस केंद्र की निदेशक बन गई, जिसने हज़ारों सैनिकों के लिए भोजन-पानी का प्रबंध किया। जब युद्ध समाप्त हो गया, तो वह महिला मताधिकार संस्था से जुड़ गई, और उनके लिए महिलाओं को प्रभावित करने वाले कानूनों पर रपट लिखने का कार्य करने लगी। फिर १९२१ में उसके पति को पोलियो की बीमारी हो गई, जिससे वह पंगु हो गए। एलेनोर ने इस रोग से उबरने में उसकी बहुत सहायता की, लेकिन फिर भी उसकी टाँगें इतनी निर्बल हो गईं कि उसे जीवन भर धातु के बने ब्रेस पहनने पड़े। एलेनोर ने फैंक्लिन की माँ के विरोध के बावजूद उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को प्रेरित किया, जबकि उसकी माँ चाहती थी कि वह राजनीति छोड़ कर घर पर ही अपना समय बिताये।

महिला मतदाताओं की सभाओं में एलेनोर अपने पति के स्थान पर स्वयं भाषण देने लगी, जिससे लोग उसके पति को याद रखें। उसके इन प्रयासों का अच्छा परिणाम भी निकला, और फ्रेंक्लिन न्यूयॉर्क के गवर्नर पद के लिए चुनाव जीत गए। फ्रेंक्लिन की टांगों की जगह एलेनोर ने ले ली, और वह स्वयं जेलों और मानसिक हस्पतालों का दौरा करती और उनकी स्थिति की जानकारी फ्रेंक्लिन को देती। इसके अलावा सप्ताह में कई दिन वह लड़कियों के स्कूल में पढ़ाती भी थी, जिसकी स्थापना में उसकी भी भागीदारी थी। १९३२ में जब फ्रेंक्लिन राष्ट्रपति पद के लिए चुने गए, तब उसे थोड़ा दुःख हुआ कि वह अब सामाजिक कार्यों में योगदान नहीं दे पायेगी। लेकिन जब वह राजधानी पहुंची तो अपनी ऊर्जा, बुद्धिमत्ता, नैतिकता व अन्य अनेकों प्रतिभाओं के साथ वह एक ऐसी प्रथम-महिला बन गई, जैसी राष्ट्र ने पहले कभी न देखी थी।

एक कुशल योद्धा की तरह एलेनोर ने सरकारी कार्यों के निरीक्षण के लिए हज़ारों मील की यात्रा की, और उनकी रपट अपने पति को देकर उनके काम में सहायता की। उसने निर्धनों, शोषितों और वंचितों के अधिकारों के लिए भी बहुत कार्य किया। महिलाओं, अश्वेत लोगों, यहूदी शरणार्थियों, छोटे किसानों व कपडा मिल मज़दूरों के मुद्दों और चिंताओं को उसने स्वयं की चिन्ताओं की तरह देखा। इन सब मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करने को उसने अनेकों व्याख्यान दिये, और उनके लिए अथक परिश्रम किया। समाचार पत्रों के अपने स्तम्भों, और रेडियो-वार्ताओं के माध्यम से उसकी बात सभी अमेरिकन लोगों तक पहुंची।

रंगभेद से ग्रसित दक्षिणी इलाके में जब वह एक गोष्टी में भाग ले रही थी, तो उसने देखा कि काले और गोरे लोगों का साथ बैठना वहां वर्जित था। तब एलेनोर अपनी कुर्सी से उठी, और अश्वेत लोगों के साथ जाकर बैठ गई। एक पुलिस अफसर ने उसे बताया कि वह कानून का उल्लंघन कर रही है, तो उसने अपनी कुर्सी कालों और गोरों के बीच के गलियारे में खिसका ली, और वहां बैठ गई।

फ्रेंक्लिन रूज़वेल्ट की मृत्यु के बाद भी एलेनोर ने अपना काम जारी रखा। राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने उसे प्रेरित किया कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ में अमेरिका की प्रतिनिधि बन जाये। राष्ट्र संघ द्वारा सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा-पत्र का अंगीकरण उसके प्रयासों से ही संभव हो पाया। १९५३ में राष्ट्र संघ से सेवा-निवृत्त होने बाद भी वह विश्व-शांति के लक्ष्य का प्रचार-प्रसार करने के लिए यात्रा करती रही, और व्याख्यान देती रही। राष्ट्रपति जॉन कैनेडी ने उसे शांति-वाहिनी (Peace Corps) की राष्ट्रीय सलाहकार समिति का सदस्य नियुक्त कर दिया, और उसे राष्ट्रपति के महिला आयोग के प्रमुख पद पर भी नियुक्त किया। अपने मानव-कल्याण के कार्यों के लिए एलेनोर को कई सम्मान व पुरस्कार भी मिले। उसकी मृत्यु के बाद उसके एक प्रशंसक ने कहा, "उसने अंधकार को कोसने की अपेक्षा एक दिया जलाना उचित समझा, और उस दिए की रौशनी से सारा विश्व प्रकाशित हुआ है।"

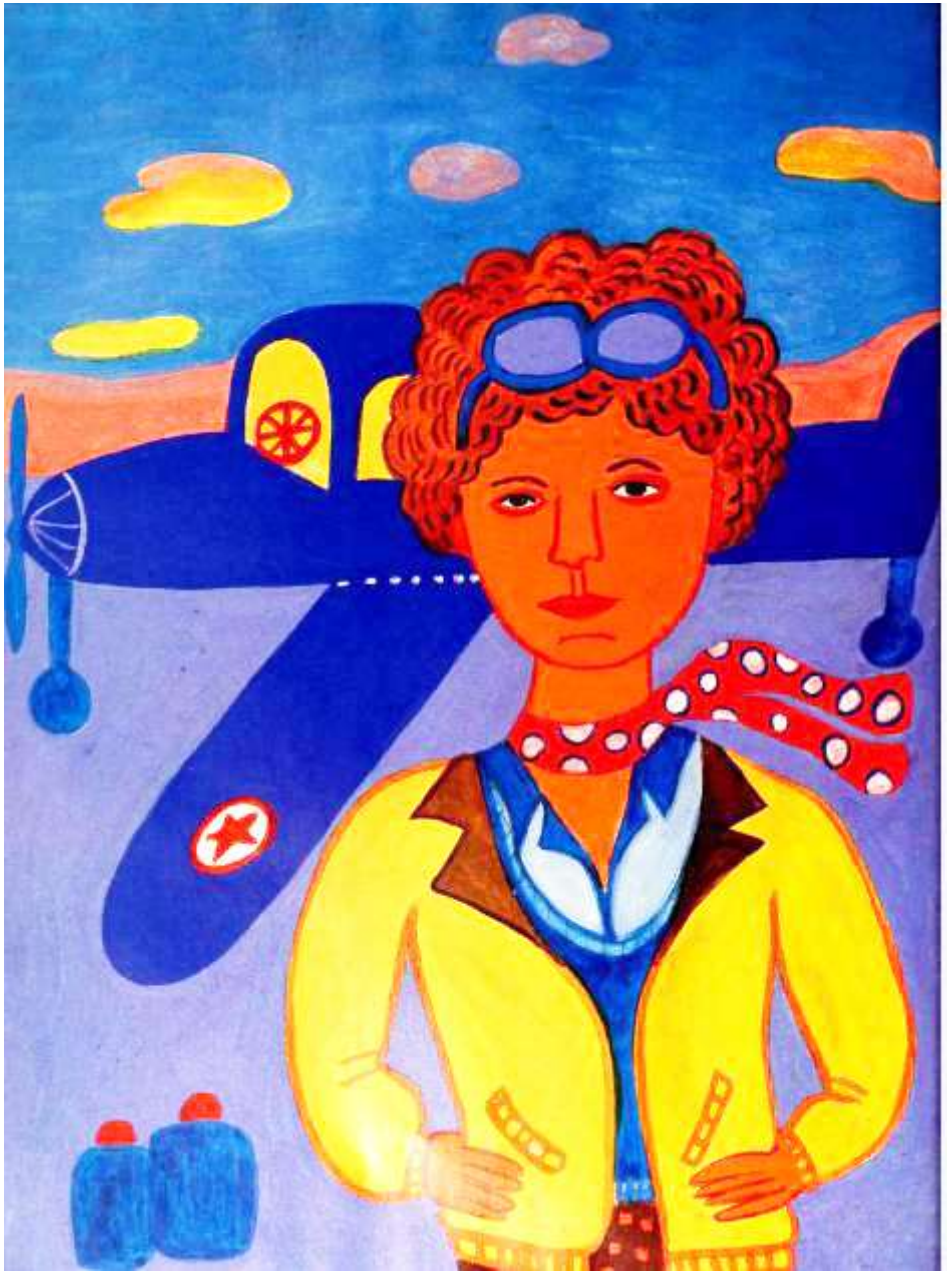

एमेलिया एयरहर्ट
१८९७-१९३७

महिलाओं को भी वैसे ही प्रयास करने होंगे जैसे पुरुषों ने किये हैं। यदि वे असफल भी हों, तो यह असफलता दूसरों के लिए चुनौती की तरह होनी चाहिए।

-- एमेलिया एयरहर्ट, अपने पति को लिखे एक पत्र में, जो उन्होंने धरती की परिक्रमा करने वाली अपनी अंतिम उड़ान से पहले लिखा था।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में लड़कियों का दौड़ना-भागना,उछालना-कूदना या तूफानी खेलों में भाग लेना अनुचित माना जाता था। लेकिन ऐसी सामाजिक धारणा एमेलिया मैरी एयरहर्ट को बिलकुल न रोक पाई। मिली, जो कि उसका घरेलू नाम था, का व्यवहार एकदम लड़कों जैसा था। उसे गुड्डे-गुड़ियों से खेलना बिलकुल पसंद नहीं था। उसे तो लड़कों वाले उछल-कूद के खेल ही अच्छे लगते थे। उसे किताबें भी वही अच्छी लगती थीं जिसमें लड़के रोमांचक काम करते थे। वह सोचती थी कि इन कहानियों में लड़कियां ये सब काम क्यों नहीं करतीं, जबकि उसे और उसकी बहन म्यूरियल को ऐसे कामों में बहुत मज़ा आता था। उनके माता-पिता, एमी और एडविन, दोनों से बहुत स्नेह करते थे, और उन्हें पूरी स्वतंत्रता देते थे। एक बार मिली और उसकी चचेरी बहनों ने मिल कर घर के पिछवाड़े में एक रोलर-कोस्टर झूला बनाया, और मिली ने सबसे पहले उस पर सवारी की।

जब वह बड़ी हुई, तो स्कूल में भी उसने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। स्नातक परीक्षा के बाद वह निश्चय नहीं कर पा रही थी, कि अब वह क्या करे। १९१७ में वह म्यूरियल के साथ क्रिसमस मनाने टोरंटो गई, जब म्यूरियल वहां पढाई कर रही थी। हालाँकि अमेरिका प्रथम विश्व युद्ध में इसी वर्ष सम्मिलित हुआ था, कनाडा इसमें १९१४ से भाग ले रहा था। युद्ध में मरने वाले और घायल हुए अनेक सैनिकों को देख कर एमेलिया स्तब्ध रह गई, और उसने हस्पताल में नर्स बन कर घायलों की सेवा करने का निश्चय किया। वह डाक्टरी की पढाई करने का मन बना रही थी। लेकिन तभी उसके माता-पिता ने, जो अब लॉस एंजेलेस में रहते थे, उससे कुछ घरेलू समस्यांओं के कारण घर आने को कहा, तो वह वहां चली गई।

कैलिफ़ोर्निया पहुँचने के बाद ही पहली बार एमेलिया का ध्यान विमान उड़ाने की ओर आकर्षित हुआ। वायु सेना के बहुत से पायलट अब नागरिक विमानन के माध्यम से पैसा कमा रहे थे। वे लोगों को विमान उड़ाना सिखाते, और हवाई करतबों का प्रदर्शन भी करते। जब उसके पिता ने उसके लिए विमान उड़ाने के एक मौके का प्रबंध किया, तो उसे इतना अच्छा लगा, की उसने विमान उड़ाने का विधिवत प्रशिक्षण लेने का निश्चय किया। और इसका खर्चा चुकाने के लिए उसने एक टेलीफोन कंपनी में छोटी-मोटी नौकरी भी शुरू कर दी।

जल्दी ही एमेलिया को पायलट का लाइसेंस मिल गया, और जब भी मौका मिलता वह विमान उड़ने लगी। उसने पायलटों वाली पोषक भी पहनना शुरू कर दिया, यानी खाकी पतलून, चमड़े की जैकेट, हेलमेट, चश्मा और जूते। १९२१ तक उसने अपना खुद का विमान खरीद लिया था।

लेकिन विमानन की दुनिया पर मुख्यतः पुरुषों का ही एकाधिकार था। एमी फिप्प्स गेस्ट नाम की एक धनवान महिला इस यथा-स्थिति को बदलना चाहती थी। १९२७ में चार्ल्स लिन्डरबर्ग़ ने पहली बार अकेले और बिना-रुके अटलांटिक महासागर के आर-पार की उड़ान भरी थी। उसके इस कारनामे से प्रेरित होकर श्रीमती गेस्ट ने स्वयं भी ऐसा ही करने का इरादा बनाया। लेकिन जब उनके परिवारजनों ने उन्हें ऐसा करने से मना किया, तो श्रीमती गेस्ट ने एमेलिया से यह कार्य करने को कहा।

कप्तान होने के नाते सारे निर्णय एमेलिया ने ही लिए, परन्तु उसके अनुभव की कमी के कारण विमान को उड़ाने का काम पायलट बिल स्टल्टज़ ने किया। १७ जून १९२८ को एमेलिया, बिल और मैकेनिक लू गोर्डन ने न्यूफाउंडलैंड से फ्रेंडशिप नामक विमान में उड़ान भरी। चौबीस घंटे और चालीस मिनट के बाद वे सकुशल वेल्स पहुँच गए। उनकी इस उपलब्धि की हर ओर सराहना की गई। फिर भी, एमेलिया को यह ठीक नहीं लगा कि प्रशंसा के असली हक़दार - बिल और लू - तो नेपथ्य में ही रहे, और लोगों के आकर्षण का केंद्र वह स्वयं बनी रहीं। तब उसने निश्चय किया, कि अवश्य एक दिन वह स्वयं अकेले विमान उड़ा कर अटलांटिक को पार करेगी।
फ्रेंडशिप की उड़ान के बाद एमेलिया, जिसे लोग अब AE कह कर पुकारने लगे थे, ने विमानन के बारे में व्याख्यान देना और लिखना प्रारम्भ कर दिया। उसने महिलाओं की विमानन प्रतियोगिता "विमेंस एयर डर्बी" में भाग लिया, और एक विमानन कंपनी भी शुरू की। लेकिन खुद विमान उड़ाने से उसका जी अभी भरा नहीं था। १९३१ में उसने जॉर्ज पुतनम नाम के एक पुस्तक प्रकाशक से विवाह कर लिया। जब उसने जॉर्ज से अटलांटिक की उड़ान भरने के अपने सपने का ज़िक्र किया, तो जॉर्ज ने भी उसे प्रोत्साहित किया।

और AE ने तैयारी शुरू कर दी। वह "लॉकहीड वेगा" नाम के अपने विमान को ले जाना चाहती थी, लेकिन लम्बी समुद्री उड़ान के लिए इस विमान में कुछ बदलावों की आवश्यकता थी। इसलिए उसने बिना खिड़की से बाहर देखे, केवल कॉकपिट में लगे संयंत्रों को देखकर विमान उड़ाने का अभ्यास किया। आख़िरकार २१ मई १९३२ को उसने हारबर ग्रेस, न्यूफाउंडलैंड से अपनी ऐतिहासिक एकल उड़ान भरी।

शुरू में तो सब कुछ ठीक-ठाक रहा, लेकिन फिर कुछ तकनीकी परेशानियां उभरने लगीं। उसके संयंत्र ठीक से काम नहीं कर रहे थे, और उसे अंधकार व कोहरे में समुद्र से विमान की ऊँचाई की जानकारी के बिना उड़ान भरनी पड़ी। फिर उसे एक तूफ़ान का सामना करना पड़ा, और वर्षा और तेज़ हवाओं ने उसके विमान को झकझोर कर रख दिया। विमान के और कई पुर्ज़ों ने काम करना बंद कर दिया। लेकिन उसने मार्ग से डिगे बिना विमान का संतुलन बनाये रखा, और अंततः विमान को सकुशल आयरलैंड में उतारने में सफल हुई। AE ने अटलांटिक की यह उड़ान पंद्रह घंटों से कुछ कम समय में ही पूरी कर ली थी। इसके बाद तो उसकी ख्याति चारों ओर फ़ैल गई। जॉर्ज के साथ उसने लंदन, पेरिस और रोम की यात्रा की, और हर शहर में AE ने वहां के राजपरिवारों और गण्य-मान्य व्यक्तियों से भेंट की। जब वह वापस अमेरिका पहुंची तो राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने उसे वाइट हाउस आने का न्योता दिया।

१९३५ में उसने एक नया विमान, दो इंजन वाला लॉकहीड इलेक्ट्रा, लिया। तब उसने एक ऐसा कारनामा करने का निश्चय किया जो उस समय विमानन की सबसे बड़ी चुनौती माना जाता था, यानि भूमध्य रेखा के ऊपर पूरे विश्व का चक्कर। इस कारनामे को किया तो जा चुका था, लेकिन अभी तक किसी महिला द्वारा नहीं, और वह भी भूमध्य रेखा से थोड़ा उत्तर में, उसके ठीक ऊपर नहीं।

एमेलिया और जॉर्ज ने महीनों इस अभियान की तैयारी की। उन्होंने नक्शों का और मौसम के बदलावों का अध्ययन किया, और AE ने अभियान के लिए अपने एक साथी का भी चुनाव किया। यह साथी थे फ्रेड नूनन, जो कि एक पेशेवर वैमानिक और दिशा-संचालन यानि नेविगेशन के विशेषज्ञ थे। फिर एक भूल के कारण उड़ान में देरी हुई, लेकिन अंततः १ जून १९३७ को तैयारी पूरी हो चुकी थी, और AE और नूनन ने इलेक्ट्रा पर सवार होकर उड़ान भरी। यात्रा के सबसे लम्बे और खतरनाक हिस्से, यानि न्यू गिनी से लेकर प्रशांत महासागर में स्थित एक छोटे से द्वीप, हॉलैंड आइलैंड, तक के २५५६ मील लम्बे विस्तार में विमान अचानक कहीं गायब हो गया। एयरहर्ट और नूनन का कोई अता-पता नहीं मिल सका। न तो उनके मृत शरीर ही कभी मिले, और न ही विमान का कोई हिस्सा।

लोग आज भी अटकलें लगा रहे हैं कि क्या हुआ होगा। क्या विमान का ईंधन समाप्त होने के कारण वह समुद्र में गिर कर डूब गया? शायद हम कभी न जान पाएं। लेकिन उसने जो शब्द अनेक वर्ष पहले अपने पिता को लिखे थे, वे उसके समाधि-लेख के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं. "अपने इस रोमांचक अभियान में भाग लेकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। काश मैं विजयी होती, लेकिन फिर भी यह मेरे लिए सर्वथा संतोषप्रद था।"

मार्गरिट मीड
१९०१-१९७८

मेरा मानना है कि किसी व्यक्ति द्वारा मानवता के प्रति उसका योगदान ही उसकी सफलता का उचित मापदंड है।

- मार्गरिट मीड, रेडबुक पत्रिका में लिखे एक लेख में।

मार्गरिट को उसकी दादी ने ही सबसे पहले प्रेरित किया था, कि वह एक मानवविज्ञानी (Anthropologist) की तरह विचार करे। दादी ने सुझाया कि वह अपनी दोनों छोटी बहनों, एलिज़ाबेथ और प्रिसिल्ला, के व्यवहार का अध्ययन करे और उसका लेखा-जोखा रखे। उसकी बहनें जो भी कहतीं और करतीं, मार्गरिट अधिकांश बातें अपनी नोटबुक में लिख लेती। कई प्रकार से वे दोनों एक दूसरे से बहुत भिन्न थीं, लेकिन कुछ अन्य प्रकार से बहुत मिलती जुलती भी। तब उसे पता नहीं था कि एक मानव-वैज्ञानिक के रूप में उसका जीवन प्रारम्भ हो चुका था, और इस रूप में उसकी पहली अध्ययन यात्रा उसके अपने घर के आँगन से ही शुरू हुई थी। एक मानव-वैज्ञानिक का काम है इंसानों के भौतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करना।

मार्गरिट अपने पांच भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उन सभी ने अपने घर पर ही अपनी माँ और दादी से शिक्षा ग्रहण की थी। दादी का मानना था कि बच्चों को एक जगह बैठे लगातार एक घंटे से अधिक पढाई नहीं करनी चाहिए, और चीज़ों को रट्टा लगा कर पढ़ना उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था। इसके बजाय, वह मार्गरिट को बाहर जाकर उन पौधों के नमूने लाने कहतीं, जिनके बारे में उसने पढ़ा था। मार्गरिट की माँ चाहती थी कि बच्चे अपने हाथों के कुछ करना सीखें। इसलिए वह बच्चों को काष्ठ-कारी, टोकरी बनाना, बुनाई, और नक्काशी जैसे काम सिखाती थी। क्योंकि मार्गरिट के पिता एक प्रोफेसर थे, उसके बचपन में परिवार को अक्सर ही एक से दूसरे स्थान जाना पड़ता था। किशोरावस्था तक पहुँचते पहुँचते मीड परिवार लगभग साठ अलग-अलग घरों में रह चुका था। किसी नए घर में जाकर भी शीघ्र ही सहज महसूस कर पाने की क्षमता मार्गरिट के बहुत काम आई, विशेषकर वयस्क होने के बाद।

मार्गरिट ने बर्नार्ड महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के बाद कोलंबिया विश्वविद्यालय से मानव-विज्ञानं (Anthropology) में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, और फिर वह ९००० मील दूर अमेरिकन सामोआ नामक द्वीप को गई, जो दक्षिण सागर में ऑस्ट्रेलिया के पूर्व में स्थित था। उन दिनों शायद अधिकांश लोग इस बात से स्तंभित होते कि एक बीस वर्ष की लड़की ऐसी यात्रा पर अकेली जाये, लेकिन मीड दम्पति को अपनी बेटी पर गर्व था। वह पॉलीनेशियाई सभ्यता का अध्ययन कर रही थी, और यह यात्रा उसके लिए अपनी विषय-वस्तु को सीधे अनुभव करने का सम्यक माध्यम था। वहां पहुँच कर उसने स्थानीय जीवन में घुलने-मिलने का सम्पूर्ण प्रयास किया, और साथ ही अपने अनुभवों का ब्यौरा लिखती रही। मार्गरिट ने "तउ" द्वीप के एक गांव में लगभग एक वर्ष का समय व्यतीत किया, जहाँ उसने बारह से उन्नीस वर्ष की लड़कियों के जीवन का अध्ययन किया। उसने अपने अनुभवों और निष्कर्षों को अपनी अत्यंत लोकप्रिय पुस्तक "समोआ में किशोरावस्था का सफर" में संकलित किया।

मार्गरिट समझती थी कि किशोरावस्था को ठीक से समझने के लिए उसे बालकों के जीवन का भी अध्ययन करना होगा। इसलिए न्यू ज़ीलैण्ड के एक मानव-विज्ञानी रिओ फार्च्यून के साथ वह प्रशांत महासागर में स्थित न्यू गिनी के एक द्वीप पर गई। उसका विचार था कि बच्चों को अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करने का सबसे अच्छा माध्यम है, उनसे चित्र बनवाना। वह अपने साथ एक हज़ार खाली पन्ने ले गई। और पहले महीने में ही वे समाप्त हो गए। जब तक मार्गरिट न्यू गिनी से वापस चली, उसके पास बच्चों के बनाये २५ हज़ार चित्र थे। तब तक उसने अपने पति लूथर क्रैसमैन से तलाक लेकर रिओ फार्च्यून से विवाह कर लिया था।

प्रत्येक नए स्थान पर मार्गरिट ने लोगों की स्थानीय भाषा, संस्कृति, और नैतिक मूल्यों और सामाजिक जीवन को सीखने-समझने का प्रयत्न किया। इसके माध्यम से वह शोधकार्य की एक नई पद्धति विकसित कर रही थी, अर्थात अवलोकन,साक्षात्कार, और चित्रांकन, जिसे अन्य मानव-विज्ञानी भी प्रयोग कर सकते थे। उसके कार्य में संवेदनशीलता और दक्षता का बहुत महत्त्व था। उसे सही लोगों से बातचीत करके सही प्रश्न पूछने होते थे, और उसे उन बातों को भी समझना होता था, जो लोग स्पष्ट रूप से न कह कर अपने हाव-भाव से व्यक्त करते थे। वह जो भी चित्र खेंचती, उन पर लोगों के नाम व तिथि लिख लेती थी। और जिन वस्तुओं का वह संकलन करती थी, जैसे गहने, खिलौने, बर्तन, औज़ार, नक्काशियां, व कपडे इत्यादि, उन सभी को ठीक से पहचान कर उन पर उचित लेबल लगाया जाता था।

मार्गरिट ने यह मार्ग प्रशस्त करने वाला मानव-वैज्ञानिक कार्य अगले कई दशकों तक जारी रखा। उसने वापस न्यू गिनी की यात्रा की, और बाली भी गई। उसने कई पुस्तकें लिखीं जिनमें उसने जो कुछ देखा और सीखा था, उसका वर्णन किया। बाली में उसकी भेंट एक अँगरेज़ मानव-विज्ञानी ग्रेगोरी बेट्सन से हुई। अब क्योंकि रिओ फार्च्यून से उसका तलाक़ हो चुका था, उसने ग्रेगोरी से विवाह कर लिया। १९३० के दशक के अंत में दूसरे विश्व-युद्ध के खतरे के कारण उसका सारा समय अमेरिका में ही बीता, जहाँ कुछ समय उसने न्यूयॉर्क के प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में कार्य किया। १९३९ में उसने अपनी बेटी मैरी कैथरीन को जन्म दिया। इतने वर्षों तक बच्चों और किशोरों का अध्ययन करने के बाद मार्गरिट अब स्वयं एक माँ बन गई थी।

जैसे जैसे समय बीता, मार्गरिट को अपनी शोध-यात्राएं करने में परेशानी महसूस होने लगी, क्योंकि उन देशों में अक्सर साफ़-पानी और बिजली जैसी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। अब वह अपना अधिक समय कोलंबिया विश्वविद्यालय में मानव-विज्ञानं के अध्यापन में लगाती थी। फिर जब उसके टखने की हड्डी टूटी, तो उसे बैसाखियों पर निर्भर होना पड़ा, जो उसे पसंद नहीं था। इसलिए, उसने एक चेरी की लकड़ी से बनी एक विशेष छड़ी बनवाई, जिसका ऊपरी हिस्सा Y के आकार का था, जिसपर वह अपना कन्धा टेक सकती थी। टखना ठीक होने के बाद भी वह इस छड़ी को इस्तेमाल करती रही, जिससे उसके लाल रंग के दुपट्टे के साथ-साथ,यह छड़ी भी उसकी एक पहचान सी बन गई।

अपनी बहनों का अध्ययन करने वाली नन्ही मार्गरिट अब एक बहुत लम्बा सफर तय कर चुकी थी। मानव-जाति को एक परिवार मानते हुए उनके आपसी रिश्तों के बारे में उसके अध्ययन और सूक्ष्म-दृष्टि ने औरों को भी प्रेरित किया कि वे इंसानों के विभिन्न समूहों की समानताओं पर अधिक ध्यान दें, बजाय उन असमानताओं के जो उनको विभाजित करती थीं। उसकी आशा थी कि एक दिन लोग अपने बच्चों को इस प्रकार पाले -पोसेंगे जिससे कि वे "संसार में किसी भी स्थान पर सहज महसूस कर सकें, किसी भी घर में रह सकें, विभिन्न प्रकार के भोजन कर सकें, नई भाषाएँ सीखें, अनजान परिस्थिति से घबराएं नहीं, कुछ दिन रह कर किसी भी स्थान को छोड़ने समय उन्हें थोड़ा दुःख तो हो, पर वे ख़ुशी-ख़ुशी अपने यात्रा आगे जारी रखें।" निश्चय ही, मार्गरिट को अपने मार्ग में आगे बढ़ने में प्रसन्नता महसूस होती थी।

अंत